जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय

बलिया

दर्शनशास्त्र विभाग

पाठ्यक्रम सत्र 2022–23

संयोजकः–

डॉ0 अवनीश चन्द्र पाण्डेय

एसोसिएट प्रोफेसर, सतीश चन्द्र कालेज, बलिया, जे0एन0सी0यू0, बलिया

संकायाध्यक्षः–

डॉ0 अशोक कुमार सिंह

जे0एन0सी0यू0, बलिया

Department of Philosophy
Session 2022-23
दर्शनशास्त्र अध्ययन समिति सत्र 2022–23
जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

सेवा में,

कुलसचिव,
जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय,
बलिया (उ0प्र0)

महोदय,

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया के अन्तर्गत दर्शनशास्त्र विषय के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम हेतु अध्ययन परिषद की बैठक दिनांक 30.05.2021 को ऑनलाइन सम्पन्न हुई, जिसमें परिषद के सम्मानित सदस्यों के विचार विमर्श से निम्नलिखित निर्णय लिये गये:–

1. नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार प्रस्तावित दर्शनशास्त्र विषय का स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम चार सेमेस्टर में वर्गीकृत किया गया जो दो वर्ष में स्नातकोत्तर डिग्री हेतु कुल बीस प्रश्नों की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त प्रदान की जाएगी।
2. प्रत्येक सेमेस्टर में 100–100 अंक के पांच प्रश्न पत्र होंगे। चार प्रश्न पत्र लिखित होंगे। पॉचवा प्रश्नपत्र असाइनमेंट, प्रायोगिक एवं मौखिकी तीन भागों में बॅटा होगा। असाइनमेंट 25 अंक का, प्रायोगिक पक्ष 50 अंक तथा मौखिकी 25 अंक का होगा। मौखिकी का स्वरूप क्या होगा, यह विश्वविद्यालय की तत्कालीन व्यवस्था के अनुरूप तय होगा कि यह वाह्य परीक्षक द्वारा सम्पन्न होगा या पूर्णतया या आंतरिक होगा।
3. स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम इस प्रकार डिजाईन किया गया है कि यू0जी0सी0 नेट के पाठ्यक्रम का अधिकांश भाग स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में समाहित हो।
4. केवल यू0जी0जी0 नेट के वेस्टर्न लाजिक का पाठ्यक्रम स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में शामिल नहीं है, क्योंकि वह स्नातक स्पर पर पढ़ा दिया जाता है, तथा नई शिक्षा नीति 2020 के स्नातक पाठ्यक्रम में पहले से निहित है।

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया
दर्शनशास्त्र विभाग,
स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम सत्र 2022–23 सेमेस्टर व्यवस्था
पाठ्यक्रम कोड– MPHI
दर्शनशास्त्र (स्नातकोत्तर) प्रथम सेमेस्टर (28 क्रेडिट)

सेमेस्टर–I	प्रश्न पत्र	कोड	प्रश्नपत्र का नाम	अधिकतम अंक	क्रेडिट
	I	MPHI 101	भारतीय दर्शन–I	100	Credit-5
	II	MPHI 102	ग्रीक एवं मध्ययुगीन दर्शन	100	Credit-5
	III	MPHI 103	भारतीय समाज एवं राज्य दर्शन	100	Credit-5
	IV	MPHI 104	नीतिशास्त्र (भारतीय एवं पाश्चात्य)	100	Credit-5
	V	MPHI 105	प्रोजेक्ट	100	Credit-4
One paper minor/elective from other faculty & 4 Credit					Credit-4/5

दर्शनशास्त्र (स्नातकोत्तर) द्वितीय सेमेस्टर (24 क्रेडिट)

सेमेस्टर–II	प्रश्न पत्र	कोड	प्रश्नपत्र का नाम	अधिकतम अंक	क्रेडिट
	I	MPHI 201	भारतीय दर्शन–II	100	Credit-5
	II	MPHI 202	आधुनिक पाश्चात्य दर्शन	100	Credit-5
	III	MPHI 203	पाश्चात्य समाज एवं राजनीतिक दर्शन	100	Credit-5
	IV	MPHI 204	अधिनीतिशास्त्र एवं अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र	100	Credit-5
	V	MPHI 205	प्रोजेक्ट	100	Credit-4

दर्शनशास्त्र (स्नातकोत्तर) तृतीय सेमेस्टर (24 क्रेडिट)

सेमेस्टर–III	प्रश्न पत्र	कोड	प्रश्नपत्र का नाम	अधिकतम अंक	क्रेडिट
	I	MPHI 301	समकालीन भारतीय दर्शन	100	Credit-5
	II	MPHI 302	समकालीन पाश्चात्य दर्शन–I	100	Credit-5
	III	MPHI 303A/ 303B	शांकर वेदान्त (303A) (ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्य) अथवा (वैकल्पिक) श्री अरविन्द की ज्ञानमीमांसा (303B) (दिव्य जीवन–II)	100	Credit-5
	IV	MPHI 304	कान्ट का दर्शन	100	Credit-5
	V	MPHI 305	प्रोजेक्ट	100	Credit-4

दर्शनशास्त्र (स्नातकोत्तर) चतुर्थ सेमेस्टर (24 क्रेडिट)

सेमेस्टर–IV	प्रश्न पत्र	कोड	प्रश्नपत्र का नाम	अधिकतम अंक	क्रेडिट
	I	MPHI 401	तुलनात्मक धर्म	100	Credit-5
	II	MPHI 402	समकालीन पाश्चात्य दर्शन––II	100	Credit-5
	III	MPHI 403	धर्मराजाध्वरीन्द्र कृत वेदान्त परिभाषा	100	Credit-5
	IV	MPHI 404	पतंजलिकृत योगसूत्र	100	Credit-5
	V	MPHI 405	प्रोजेक्ट एवं मौखिकी (चारो सेमेस्टर में से किसी एक टापिक पर)	100	Credit-4

ऑनलाइन बैठक में निम्नांकित सदस्यों ने भाग लिया तथा पाठ्यक्रम को स्वीकृति प्रदान की।

वाह्य विशेषज्ञ–

1. प्रो0 आनन्द मिश्र, विभागाध्यक्ष, दर्शन एवं धर्म विभाग, बी0एच0यू0, वाराणसी। Online Consent
2. प्रो0 शशि सिंह, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी। Online Consent

संयोजक– डॉ0 अवनीश चन्द पाण्डेय, दर्शनशास्त्र विभाग, सतीश चन्द्र कालेज, बलिया जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया ।

संकायाध्यक्ष– डॉ0 अशोक कुमार सिंह, संकायाध्यक्ष, कला, मानविकी एवं समाज विज्ञान संकाय, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया। 30.05.2022

Programme outcome (After two years- 4 Semester PG Programme):

The completion of the 2 years (four semester) Post-graduation programme in Philosophy will enable a student to:

(i) Understand the broad ideas that are enshrined in the basic as well as specialized concepts of various centers of Philosophy.

(ii) Critically analyze the hypothesis, theories techniques and definitions offered by MPHIlosopher.

(iii) Enable students to understand the complex questions of society, politics, justice, government and become able to examine the flaw and error of any decision taken by government, social political and judicial Institution and clears what is flawless and errorless.

(iv) It enable student to deal any issues with a logical approach. If there is any clash between emotion and logic, give priority to logic and refute illogical approach of any academic and social, political, religious and judicial Institutions.

(v) By studding Philosophy of religion and comparative Philosophy of religions, develop an approach of how to deal with controversial issues related to religions clashes and resolve a harmonious solution, logically clear the misconception which promote clashes.

(vi) Utilize Ethics, Meta-ethics, and applied-Ethics how to confront environmental issues, crisis and danger and increase the domain of ethics from centered only to human being to plant being, animal being and even material being like water, land, air, fire and space and develop an integral concept of being inclusive all and exclusive nothing.

(vii) Identify how deeply Philosophy is connected to other disciplines like social science, political science and natural science.

(viii) Develop a clinical approach of yoga-like Hath Yoga, Rajyoga, Buddhist Yoga-vipashyana etc. and synthesis of Yoga to make body, mind, super mind inter connectively healthy.

(ix) By studying, some specific MPHIlosopher's text books they will gain a MPHIlosoMPHIcal insight and special metaphysical, epistemological and yogic vision which will direct the direction of student to resolve the puzzle of life, society and religion which have been perplexing human society till now and enable students to make more harmonious and better century.

(x) Learn tools, techniques and skills regarding the research oriented activities by the study and practice of project work.

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

दर्शनशास्त्र विभाग

अध्ययन समिति (22 जनवरी 2021) द्वारा संवर्द्धित एवं स्वीकृत स्नातकोत्तर (दर्शनशास्त्र) का पाठ्यक्रम

JANANAYAK CHANDRASHEKHAR UNIVERSITY, BALLIA

Department of Philosophy

Syllabus of M.A. (Philosophy) as Augmented & Accepted by the Board of Studies (Dated 22 January, 2022)

Department of Philosophy

Session 2022-23

प्रथम सेमेस्टर

प्रश्नपत्र प्रथम

भारतीय दर्शन– I

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):–एम0ए0 प्रथम सेमेस्टर के प्रथम प्रश्नपत्र भारतीय दर्शन–1, प्रथम यूनिट का उद्देश्य विद्यार्थियों को जहॉ वैदिक एवं इशादि नौ–उपनिषद में व्याप्त विविध दार्शनिक विचारों का सामान्य व विशिष्ट ज्ञान कराना है। वहीं द्वितीय यूनिट का उद्देश्य भारतीय दर्शन में भौतिकवाद का प्रतिनिधित्व करने वाले चार्वाक दर्शन के तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा व आचारमीमांसा का वृहद ज्ञान कराना है। तृतीय यूनिट का उद्देश्य भारतीय परम्परा में अवैदिक दर्शनों में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले जैन दर्शन का विहंगम अवलोकन कराना है वहीं चतुर्थ यूनिट का उद्देश्य अवैदिक परम्परा के ही एक महत्वपूर्ण दर्शन जिसका अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभाव छोड़ने वाले बौद्ध दर्शन का तार्किक अवबोध कराना है।

इकाई – 1

- वेदः– ऋत (वैश्विक व्यवस्था)–दैवीय एवं मानवीय, यज्ञ संस्था की केन्द्रियता, सृष्टि का सिद्धान्त।
- उपनिषद् : आत्म एवं अनात्म की अवधारणा, आत्मा की जागृत स्वप्न, सुषुप्ति एवं तुरीय अवस्थाऍ ब्रह्म की अवधारणा।

इकाई – 2

चार्वाक : ज्ञानमीमांसा, तत्त्वमीमांसा एवं आचारमीमांसा।

इकाई – 3

जैन दर्शन : स्याद्वाद, अनेकान्तवाद, बन्धन एवं मोक्ष।

इकाई – 4

बौद्ध दर्शन : चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, ब्राह्मण एवं श्रमण परम्परा में भेद, प्रतीत्यसमुत्पाद, अनात्मवाद, निर्वाण, बौद्ध दर्शन के चार सम्प्रदाय : वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार, माध्यमिक एवं तिब्बती बौद्ध दर्शन।

Department of Philosophy

M.A. Semester I

Paper I

Indian Philosophy – I

Unit – 1

Veda- Rta-the cosmic order, the divine and the human realms, dthe centrality of the institution of Yajna (sacrifice), Theories of creation.

Upanishad : The Concepts of self and not-self, Various states of self, The Concept of Brahmana.

Unit – 2

Charvaka : Epistemology, Metaphysics and Ethics.

Unit – 3

Jainism : Syadvada, Anekantavada, Bondage and Liberation.

Unit – 4

Buddhism : Four Noble Truths, Astangik Marga, Distinction between Brahminic and Sraminic traditions, Pratityasamutpada, Anatmavada, Nirvana, Four Sects of Buddhism. Vaibhasika Sautrantika Yogacara, Madhyamika and Tibetan Buddhism.

Suggested Readings :

1. S. Radhakrishnan, 2008, : Indian Philosophy, Vol. I & II, Oxford India Paper backs.
2. S. N. Dasgupta, 1973 : History of Indian Philosophy, Vol. I, II & III, Motilal Banarsi das, New Delhi.
3. C. D. Sharma, 2013 : A Critical Survey of Indian Philosophy, Motilal Banarsi das, New Delhi.
4. M.Hiriyanna, 1965, : Outlines of Indian Philosophy, Motilal Banarsi Das, New Delhi.
5. Yadunath Sinha, 1930 : Indian Philosophy, Vol. I & II, Macmillan London.
6. संगम लाल पाण्डेय, 1973 : भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण, सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस।
7. नन्द किशोर देवराज, 1976 : भारतीय दर्शन, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ।
8. दत्त एवं चटर्जी, 2012 : भारतीय दर्शन, पुस्तक भण्डार पब्लिशिंग हाउस, पटना।
9. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, 1963 : भारतीय दर्शन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसीदास।
10. बलदेव प्रसाद उपाध्याय, 1976 : भारतीय दर्शन, शारदा मन्दिर, वाराणसी।
11. चन्द्रधर शर्मा, 1996 : भारतीय दर्शन आलोचना एवं अनुशीलन, मोतीलाल बनारसीदास।
12. बी0 एन0 सिंह, 1988 : भारतीय दर्शन की रूपरेखा, आशा प्रकाशन, दिल्ली।

दर्शनशास्त्र विभाग

एम0ए0 सेमेस्टर प्रथम,

प्रश्नपत्र द्वितीय

ग्रीक एवं मध्ययुगीन दर्शन

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):—एम0ए0 प्रथम सेमेस्टर के द्वितीय प्रश्नपत्र ग्रीक एवं मध्ययुगीन दर्शन के प्रथम यूनिट का उद्देश्य विद्यार्थियों को जहॉ ग्रीक दर्शन की विशिष्टताओं के साथ–साथ उसके उद्भव से लेकर चरमोत्कर्ष तक उसकी तत्त्वमीमांसा में समय–समय पर होने वाले परिवर्तन के प्रतिनिधि दार्शनिकों के विचारों का अवबोध कराना है वहीं द्वितीय यूनिट का उद्देश्य प्लेटो के दर्शन का विहंगम, अवलोकन करना व कराना है। तृतीय यूनिट का उद्देश्य अरस्तु के दर्शन की प्लेटो से असहमति व उनकी स्वयं की ज्ञानमीमांसा व तत्त्वमीमांसा का व्यापक विमर्श करना व कराना है। जबकि चतुर्थ यूनिट का उद्देश्य ग्रीक युग से मध्य युग में प्रवेश व आश्चर्यजनक बौद्धिक कौतुहल के स्थान पर आस्था आधारित बौद्धिक कौतुहल को स्थान देने वाले मध्ययुगीन दर्शन जिसमें बुद्धि का महत्व द्वितीयक एवं आस्था का महत्व प्राथमिक हो जाता है, के प्रतिनिधि दार्शनिकों के विचारों का अवबोध करना व कराना है।

इकाई – 1 पूर्व–साक्रेटिक एवं साक्रेटिक ग्रीक दर्शन

सुकरात–पूर्व एवं साक्रेटिक ग्रीक दर्शन का सामान्य परिचयः थेलीज एनेक्जीगोरस, एनेक्जीमेनीज, आयोनियन, पाइथागोरस, ल्यूसिपस, डेमोक्रिटस, जीनो, पार्मेनाइडीज, हेरेक्लाइट, डेमोक्रीट्स, सोशलिस्ट।

इकाई – 2 पोस्ट–साक्रेटिक ग्रीक दर्शन

पोस्ट–साक्रेटिक ग्रीक दर्शन की विशिष्टतायें, प्लेटो – प्रत्यय का स्वरूप, प्रत्ययवाद, शुभ का प्रत्यय, ज्ञान का सिद्धान्त।

इकाई – 3 पोस्ट–साक्रेटिक ग्रीक दर्शन

अरस्तू – प्लेटो के प्रत्ययवाद का खण्डन, द्रव्य एवं आकार, कारणता, सामान्य एवं

विशेष।

इकाई – 4 मध्ययुगीन–दर्शन

सन्त आगस्टाइन –ईश्वर, अशुभ की समस्या, संकल्प की स्वतन्त्रता।
सन्त एन्सेल्म– ईश्वर के अस्तित्व सम्बन्धी सत्तामूलक तर्क।
सन्त एक्विनस – आस्था एवं तर्क, सार एवं अस्तित्व, ईश्वर, ईश्वर के अस्तित्व हेतु तर्क।

Department of Philosophy

M.A. Semester - I

Paper – II
Greek and Medieval philosophy

Unit – 1 Pre-Socratic and Socratic Greek Philosophy

General Introduction to Pre-Socratic Greek Philosophy :
Thales, Anaxagoras, Anaximenies, Ionians, Pythagoras, Leucipus, Democritus, Zeno, Parmenides, Heraclitus, Socrates.

Unit – 2 Post-Socratic Greek Philosophy

Characteristics of Post-Socratic Greek Philosophy.
Plato : Nature of Idea, Idealism, Idea of Good, Theory of Knowledge.

Unit – 3 Post-Socratic Greek Philosophy

Aristotle: Refutation of Plato's Idealism, Form and Matter, Causality, Universal and Particular.

Unit – 4 Medieval Philosophy

Saint Augustine: God, Problem of Evil, Freedom of Will.
Saint Anselm: The ontological argument for the Existence of God.
Saint Aquinas: Faith and reason, Essence and Existence, God and Proofs for the Existence of God.

Suggested Readings:

1. Fuller B.A.G., 1952, Henery Halt & Co. : A History of Philosophy
2. W.T. Stace. 2010, Macmillal Publisher, India. : A Critical History of Philosophy
3. Falkenberg, 2019, Good Press. : A History of Modern Philosophy
4. Thilly, 2001, Central Publishing House, Allahabad. : A History of Philosophy
5. W.K. Wright, 1952, Macmillal Publisher, India. : A History of Modern Philosophy
6. चन्द्रधर शर्मा, 1992, मोती लाल बनारसी दास नई दिल्ली। : पाश्चात्य दर्शन
7. याकूब मसीह, 1994, मोती लाल बनारसी दास नई दिल्ली। : पाश्चात्य दर्शन का समीक्षात्मक इतिहास
8. संगम लाल पाण्डेय, 1964, दर्शनपीठ, इलाहाबाद। : आधुनिक दर्शन की भूमिका
9. जे०एस०श्रीवास्तव, 1980 : आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
10. हरिशंकर उपाध्याय, 2002, अनुशीलन प्रकाशन, इलाहाबाद। : पाश्चात्य दर्शन का उद्‌भव एवं विकास
11. दयाकृष्ण, 1982, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर। : पाश्चात्य दर्शन Vol. I & II

दर्शनशास्त्र विभाग

एम0ए0 सेमेस्टर प्रथम,

प्रश्नपत्र तृतीय

भारतीय समाज एवं राज्य दर्शन

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):–एम0ए0 प्रथम सेमेस्टर के तृतीय प्रश्नपत्र भारतीय समाज एवं राज्य दर्शन के प्रथम यूनिट का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय समाज एवं राज्य दर्शन का स्वरूप क्षेत्र एवं विशिष्टतायें। महाभारतः– महाभारत का समाज एवं राज्यदर्शन, दण्डनीति का आधार, राजधर्म, कानून एवं शासक, राजा युद्धिष्ठिर से नारद द्वारा पूछे गये प्रश्न। कौटिल्य– सम्प्रभुता, राज्य के सात स्तम्भ, राज्य, समाज, सामाजिक जीवन, राज्य–प्रशासन, राज्य–अर्थ व्यवस्था, कानून एवं न्याय, आन्तरिक सुरक्षा, कल्याण एवं विदेशी मामले (बाहरी राज्यों से सम्बन्ध में) बोध कराना। जबकि द्वितीय यूनिट का उद्देश्य कामन्दक– कामन्दकीय राज्य व्यवस्था एवं सामाजिक व्यवस्था, राज्य के प्रमुख तत्व। सामाजिक संस्था– परिवार एवं विवाह के प्राकृतिक एवं नैतिक आधार। सामाजिक परिवर्तन, परम्परा एवं आधुनिकता। भारतीय, सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति में परिवार, विवाह, वर्णाश्रम की भूमिका। वहीं तृतीय यूनिट का उद्देश्य भारतीय संवैधानिक नैतिकता– धर्म निरपेक्षतावाद, सर्वधर्म समभाव, मौलिक अधिकार, मौलिक कर्तव्य। गांधीवादी राज्य व्यवस्था– सर्वोदय सत्याग्रह, स्वदेशी, अहिंसा एवं आतंकवाद का अवबोध करना व कराना है। चतुर्थ यूनिट का उद्देश्य भारतीय लोकतंत्रः– स्वरूप, स्वरूप परिवर्तन एवं क्रमिक विकास। सामाजिक दार्शनिक के रूप में आचार्य नरेन्द्रदेव, डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर एवं महर्षि अरविन्द के विचार के प्रति अपना दृष्टिकोण विकसित करना व कराना है।

इकाई – 1

भारतीय समाज एवं राज्य दर्शन का स्वरूप क्षेत्र एवं विशिष्टतायें।
महाभारतः– महाभारत का समाज एवं राज्यदर्शन, दण्डनीति का आधार, राजधर्म, कानून एवं शासक, राजा युद्धिष्ठिर से नारद द्वारा पूछे गये प्रश्न।
कौटिल्य– सम्प्रभुता, राज्य के सात स्तम्भ, राज्य, समाज, सामाजिक जीवन, राज्य–प्रशासन, राज्य–अर्थ व्यवस्था, कानून एवं न्याय, आन्तरिक सुरक्षा, कल्याण एवं विदेशी मामले (बाहरी राज्यों से सम्बन्ध में)

इकाई – 2

कामन्दक– कामन्दकीय राज्य व्यवस्था एवं सामाजिक व्यवस्था, राज्य के प्रमुख तत्व।
सामाजिक संस्था– परिवार एवं विवाह के प्राकृतिक एवं नैतिक आधार। सामाजिक परिवर्तन, परम्परा एवं आधुनिकता। भारतीय, सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति में परिवार, विवाह, वर्णाश्रम की भूमिका।

इकाई – 3

भारतीय संवैधानिक नैतिकता– धर्म निरपेक्षतावाद, सर्वधर्म समभाव, मौलिक अधिकार, मौलिक कर्तव्य।
गांधीवादी राज्य व्यवस्था– सर्वोदय सत्याग्रह, स्वदेशी, अहिंसा एवं आतंकवाद।

इकाई – 4

भारतीय लोकतंत्रः– स्वरूप, स्वरूप परिवर्तन एवं क्रमिक विकास।
सामाजिक दार्शनिक के रूप में आचार्य नरेन्द्रदेव, डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर एवं महर्षि अरविन्द के विचार।

Department of philosophy

M.A. Semester - I

Paper – III (Optional)
Indian Social and Political philosophy

Unit – 1

The nature, spke and characteristics of Indian Social and Political Philosophy.
Mahabharata- Social and Political Philosophy of Mahabharata, Danda-niti, foundation of Danda-niti, RajDharma, Law and Goverance, Narada's questions to King Yudhishthira.
Kautilya- Sovereignty, seven pillars of state-craft, state, society, social-life, state administration, state economy, law and justice, internal security, welfare and external affairs.

Unit – 2

Kamandak- Kamandakiya state system and social system, state elements.
Social Institutions : Natural and Moral Basis of Family and Marriage. Social Change, Tradition and Modernity.
The Role of Family, Marriage, Varna Ashrama in Acheiving Indian social Goals.

Unit – 3

The Indian constitutional morality, secularism, equal respect for all religions and fundamental rights and fundamental duties.
Gandhiyan state systeme- Sarvodaya, Satyagrah, Swadeshi, Ahinsa and Terrorism.

Unit – 4

Indian Democracy- Its nature, needful changes in its nature and its gradual devlopment.
Thought of Social MPHIlosphers- Acharya Narendra Dev, Dr. Bhim Rao Ambedkar, Sri Aurobindo regarding Socialism.

Suggested Readings:

1. A. K. Sinha, 1962 : An Outlines of Social Philosophy. Rajkamal Prakashan, New Delhi.
2. J. S. Mackenzie, 2016 : An Outlines of Social Philosophy, Palala Press.
3. जगदीश सहाय श्रीवास्तव, 2002 : समाज दर्शन की भूमिका, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
4. शिवभानु सिंह, 2016 : समाज दर्शन का सर्वेक्षण, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
5. हृदय नारायण मिश्र, 1995 : समाज दर्शन (सैद्धान्तिक एवं समस्यात्मक), शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. वशिष्ठ नारायण सिन्हा, 1980 : समाज दर्शन, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
7. गीतारानी अग्रवाल, 2008 : धर्म शास्त्रों का समाजदर्शन, न्यू भारती बुक कारपोरेशन, दिल्ली।
8. संगम लाल पाण्डेय, 1962 : समाज दर्शन की एक प्रणाली, सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।
9. पिताम्बर दास, 2009 : डॉ0 भीमराव अम्बेडकर का मानववाद, कला प्रकाशन, वाराणसी।

दर्शनशास्त्र विभाग

एम0ए0 सेमेस्टर प्रथम,

प्रश्नपत्र चतुर्थ

नीतिशास्त्र (भारतीय एवं पाश्चात्य)

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):–एम0ए0 प्रथम सेमेस्टर के चतुर्थ प्रश्नपत्र नीतिशास्त्र (भारतीय एवं पाश्चात्य) के प्रथम यूनिट का उद्देश्य विद्यार्थियों को पाश्चात्य नीतिशास्त्र की परिभाषा, नैतिक निर्णय के साथ–साथ भारतीय नीतिशास्त्र की विशेषताओं को उद्घाटित करते हुए भारतीय नैतिकता की पूर्वमान्यताओं जैसे– कर्मवाद, पुनर्जन्म, आत्मा की अमरता का नैतिक व्यवहारों में महत्व का अवबोध करना व कराना है। जबकि द्वितीय यूनिट का उद्देश्य भारतीय नीतिशास्त्र में पुरूषार्थ की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति में नैतिक मानदण्डों के आधार पर सदुपयोग, गीता के नीतिशास्त्र का निष्काम कर्म व स्थितप्रज्ञ की अवधारणा तथा गांधी के नैतिक सिद्धान्तों का अवबोध करना व कराना है। तृतीय यूनिट का उद्देश्य अरस्तु के सद्गुण सिद्धान्त तथा बेंथम व मिल के उपयोगितावादी नीतिशास्त्र का औचित्य व अनौचित्य वर्तमान समय में बताना है। वहीं चौथी यूनिट का उद्देश्य काण्ट के प्रयोजनमूलक नीतिशास्त्र तथा नित्शे के शक्ति आधारित नीतिशास्त्र के औचित्य और अनौचित्य का ज्ञान कराने के साथ–साथ संकल्प की स्वतंत्रता तथा उत्तरदायित्व–बोध का नैतिक कर्मों के सम्बन्ध में स्थान व महत्व निर्धारित करना है।

इकाई – 1

क. नीतिशास्त्र की परिभाषा, स्वरूप एवं क्षेत्र, नैतिक कर्म एवं गैर–नैत्तिक कर्म,

ख. नैतिक निर्णय इसका स्वरूप, विषय एवं विशेषताएं।

ग. शुभ की अवधारणा, उचित, न्याय, कर्तव्य, उत्तरदायित्व, आधारभूत सद्गुण।

घ. नीतिशास्त्र की विविध अवधारणायें:– परिणामवादी, प्रयोजनवादी, व्यक्तिवादी, वस्तुवादी, आदर्शवादी।

ड0. भारतीय नीतिशास्त्र की विशेषताएं।

च. भारतीय नैतिकता की पूर्वमान्यतायें– कर्मवाद, पुनर्जन्म, आत्मा की अमरता।

छ. साध्य साधन विवाद, इतिकर्तव्यता।

ज. ऋत् एवं सत्य, ऋण एवं यज्ञ, कर्म की अवधारणा।

इकाई – 2

क. पुरूषार्थ की अवधारणा, श्रेयस, प्रेयस, वर्णाश्रम धर्म, धर्म, साधारण धर्म, विशिष्ट धर्म, आपदधर्म।

ख. कर्म योग– निष्काम कर्म, स्थित प्रज्ञ, स्वधर्म, लोकसंग्रह।

ग. अपूर्व एवं अदृष्ट।

घ. योग–क्षेम।

ड0– अष्टांग योग।

च– जैन दर्शन के नैतिक सिद्धान्त– संवर–निर्जरा, त्रिरत्न, पंचमहाव्रत।

छ– बौद्ध दर्शन का नैतिक सिद्धान्त– उपाय कौशल, ब्रह्म बिहार, मैत्री, करूणा, मुदिता, उपेक्षा, बोधिसत्त्व।

ज– चार्वाक का सुखवाद।

झ. गाँधी का नैतिक दर्शन:– अहिंसा का सिद्धान्त एवं सत्याग्रह की अवधारणा।

इकाई – 3

क. अरस्तू के अनुसार सद्गुणों का स्वरूप।

ख. अरस्तू के नैतिक दर्शन में मध्यम मार्ग।

ग. बेन्थम का उपयोगितावाद।

घ. मिल का उपयोगितावाद।

ड0. सिजविक का बुद्धिमूलक उपयोगितावाद।

इकाई – 4

क. संकल्प की स्वतन्त्रता और नैतिक उत्तरदायित्व।

ख. काण्ट का नैतिक दर्शन– शुभ संकल्प, कर्तव्य के लिए कर्तव्य, निरपेक्ष आदेश, नैतिकता की पूर्व–मान्यताएं।

ग. आत्मपूर्णतावादी नीतिशास्त्र।

घ. नीत्शे– मूल्यों का मूल्यांतरण।

ड0. दण्ड के सिद्धान्त।

Department of Philosophy

M.A. Semester - I

Paper – IV

Ethics (Indian and Western)

Unit – 1

1) Definition of Ethics, its Nature and scope, Moral action and Non-moral action,
2) Moral Judgement, its nature, object and characteristics.
3) Concepts of good, right, justice, duty, obligation, cardinal virtues.
4) Various concept of Ethics : Deontological, Teleological, Individualistic, Realistic, Idealistic.
5) Characteristics of Indian Ethic.
6) Postulates of Indian Morality: Karmavad, Rebrith and Immortality of Soul.
7) End-mean dispute of morality, Iti-Kartavyata.
8) Rta and Satya, Rna and Yajna, concept of duty.

Unit – 2

1) The Concept of Purusartha, Sreyas and Preyas., Varnashrama dharama, Dharma, Sadharan Dharma, Vishisht Dharma, Aapaddharma.
2) Karma Yoga- Nishkam karma, Sthitprajna, Swadharma, Loksangraha.
3) Apoorva and Adrishta.
4) Yoga-Kshema.
5) Ashtang Yoga.
6) Moral theory of Jain Philosophy- Sanwar and Nirjara, Triratna, Panchmahavrat.
7) Moral theory of Buddhist Philosophy- Upaya Kaushal, Brhama Vihar, Maitri, Karuna, Mudita, Upeksha, Bodhisattava.
8) Hedonism of Charvak.
9) Gandhian moral Philosophy: Concept of Non-violance and concept of Satyagraha.

Unit – 3

1) The Nature of Virtue according to Aristole.
2) The Golden Mean in Aristotle's Moral Philosophy.
3) Bentham's Utililerianism
4) Mills Utilitarianism.
5) Sadgwick's rational Utilitarianism.

Unit – 4

1) Freedom of will and Moral Responsibility.
2) Kant's Moral Philosophy: Good Will, Duty for Duty Sake, Categorical Imperative, Postulates of Morality.
3) Eudaemonian Ethics.
4) Nietzsche-Trans-valuation of Values.
5) Theory of punishment.

Suggested Readings :

1. Aristotle, 1889: Nichomachean Ethics, Jr. R.W. Brown, London.
2. William Lillie, 1967 : Introduction of Ethics, Allied Publishers Pvt. Ltd.
3. Kant, 2012: Foundation of the Metaphysics of Morals, Cambridge University Press.
4. William K. Frankena and Johri T. Granrose (ed.), 1974: Introductory Readings in Ethics, Prentice Hall, U.S.
5. Sellers and Hosperse (ed.), 1952: Readings in Ethical Theory, Appleton center, Newyork.
6. वेद प्रकाश वर्मा, 1992 : नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त, अलायड पब्लिशर्स प्रा0लि0, नई दिल्ली।
7. नित्यानन्द मिश्र, 2004: नीतिशास्त्र, मोतीलाल बनारसीदास।
8. संगम लाल पाण्डेय, 1962: नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण, सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।

दर्शनशास्त्र विभाग

एम0ए0 सेमेस्टर प्रथम,

प्रश्नपत्र पंचम

प्रोजेक्ट

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):–एम0ए0 प्रथम सेमेस्टर के पंचम प्रश्न पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रोजेक्ट के उद्देश्य, विषय वस्तु की प्रासंगिकता उसकी समाज में उपयोगिता और उसकी तार्किकता एवं प्रामाणिकता को केन्द्र में रखते हुए किसी एक शीर्षक पर (जो उपरोक्त चार प्रश्न पत्रों में से किसी एक प्रश्न पत्र के एक शीर्षक पर होगा) होगा। प्रोजेक्ट का उद्देश्य विद्यार्थियों में शोध–वृत्ति में अभिरूचि पैदा करना है जिसमें विद्यार्थी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने शोध–शीर्षक के समस्त वस्तुनिष्ठ एवं विषयिनिष्ठ पहलुओं पर विचारोपरान्त ही किसी निष्कर्ष को स्थापित करें। उसका निष्कर्ष तार्किक एवं प्रामाणिक होना चाहिए तथा साहित्यिक चोरी से मुक्त होना चाहिए।

Department of Philosophy

M.A. Semester - I

Paper – V

Project

दर्शनशास्त्र विभाग
एम0ए0 सेमेस्टर द्वितीय
प्रश्नपत्र प्रथम
भारतीय दर्शन– II

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):–एम0ए0 द्वितीय सेमेस्टर के प्रथम प्रश्नपत्र भारतीय दर्शन–2, प्रथम यूनिट का उद्देश्य विद्यार्थियों को जहॉ षड्दर्शन के सांख्य दर्शन के महत्वपूर्ण सिद्धान्तों का अवबोध कराना व इसके समान तंत्र योग दर्शन के योगांगों का ज्ञान कराने के साथ–साथ व्यक्ति के स्वास्थ्य व व्यहार के नियंत्रण से मानव एवं मानव समाज की विविध दुखों से निवृत्ति के मार्ग का ज्ञान व बोध करना व कराना है। द्वितीय यूनिट का उद्देश्य षड्दर्शन के न्यायदर्शन की ज्ञानमीमांसा व ईश्वरमीमांसा के साथ उसके समान तंत्र वैशेषिक दर्शन की परमाणुवादी पदार्थमीमांसा का अवबोध करना व कराना है। वहीं तृतीय यूनिट का उद्देश्य षड्दर्शन के पूर्वमीमांसा अर्थात् मीमांसा दर्शन के कर्म सिद्धान्त व ज्ञान सिद्धान्त तथा ज्ञान की प्रामाणिकता से सम्बन्धित गूढ़ प्रश्नों का तार्किक अवबोध कराना है व इसके समान तंत्र अर्थात् वेदांत या उत्तरमीमांसा की प्रमुख शाखा अद्वैत वेदान्त के ब्रह्म, आत्मा व माया सिद्धान्त का तार्किक ज्ञान करना व कराना है। चतुर्थ यूनिट का उद्देश्य विशिष्टाद्वैत वेदान्त जिसके प्रतिपादक रामानुजाचार्य हैं, के दार्शनिक सिद्धान्तों का ज्ञान कराते हुए शंकराचार्य से उनकी विशिष्टता स्पष्ट करना व कराना है। मध्वाचार्य के द्वैतवाद, निम्बार्ग के द्वैताद्वैतवाद एवं बल्लभाचार्य के द्वैताद्वैतवाद का ज्ञान कराना एवं भारतीय परम्परा में वेदान्त दर्शन के विविध स्वरूपों से अवगत कराना है।

इकाई – 1

सांख्यदर्शन : सत्कार्यवाद, पुरुष एवं उसके सत्ता हेतु प्रमाण तथा पुरूष की अनेकता, प्रकृति एवं उसके निर्मायक गुण तथा विकसित तत्व, प्रकृति की सत्ता हेतु प्रमाण, विकासवाद तथा प्रकृति एवं पुरूष में सम्बन्ध, सांख्य का अनिश्वरवाद।

योगदर्शन : चित्त की अवधारणा एवं चित्तवृत्ति, चित्त की विविध भूमियां, योगदर्शन में ईश्वर की भूमिका, अष्टांगयोग।

इकाई – 2

न्यायदर्शनः प्रमा एवं प्रमाण, प्रमाण के सिद्धान्त, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द हेत्त्वाभास, ईश्वर की अवधारणा, प्रमाण व्यवस्था एवं प्रमाण सम्प्लव के सम्बन्ध में बौद्ध दर्शन एवं न्यायदर्शन के बीच संवाद, अन्यथाख्यातिवाद।

वैशेषिक दर्शन : पदार्थ की अवधारणा एवं इसके प्रकार, असत्कार्यवाद, कारण के प्रकारः– समवायिकारण, असमवायिकारण, निमित्तकारण, परमाणुकारणवाद।

इकाई – 3

मीमांसादर्शन : कर्म का स्वरूप, प्रामाण्यवादः स्वतःप्रमाण्यवाद एवं परतःप्रमाण्यवाद, श्रुति और इसका महत्व, श्रुति वाक्यों का वर्गीकरणः विधि, निषेध एवं अर्थवाद, धर्म, भावना, शब्द नित्यवाद, जाति, शक्तिवाद, कुमारिल एवं प्रभाकर सम्प्रदाय के बीच भेद के प्रमुख बिन्दु, त्रिपुटी प्रत्यक्षवाद एवं ज्ञाततावाद, अभाव एवं अनुपलब्धि, अन्विताभिधानवाद एवं अभिहितान्वयवाद, भ्रम के सिद्धान्त, अख्याति, विपरीतख्याति एवं अनीश्वरवाद।

अद्वैत वेदान्तः ब्रह्म, आत्मा, ब्रह्म एवं आत्मा में सम्बन्ध, सत्ता के त्रिविध स्तर, अध्यास, माया, जीव, विवर्तवाद, अनिर्वचनीयख्यातिवाद एवं मोक्ष का स्वरूप।

इकाई – 4

विशिष्टाद्वैत वेदान्तः सगुण ब्रह्म, मायावाद का खण्डन, ब्रह्म एवं जीव तथा अपृथक सिद्धिसम्बन्ध, भक्ति एवं प्रपत्ति, ब्रह्मपरिणामवाद, सत्ख्याति, मुक्ति।

द्वैत वेदान्तः निर्गुण ब्रह्म का खण्डन, माया का खण्डन, भेद एवं साक्षी, भक्ति।

द्वैताद्वैत वेदान्तः ज्ञान स्वरूप की अवधारणा, अजीव के प्रकार।

शुद्धाद्वैतवादः अविकृत परिणामवाद की अवधारणा।

Department of Philosophy

M.A. Semester – II

Paper - I

Indian Philosophy – II

Unit – 1

Samkhya : Satkaryavada, Purusha and Argument for the its existence, plurality of Purush and argument for its plurality, Prakriti its elements and Evolutes, Argument for the its existence of Prakriti, Evolution theory of Sankhya Philosophy and the relation between Prakriti and Purush, Atheism of Sankhya Philosophy.

Yoga : Concept of Chitta and Chitta-vritti, Stageg of Chitta Bhumi, The role of God in Yoga Philosophy Astangyoga.

Unit – 2

Nyay : Prama and Pramana, theories of Pramana, Pratyaksh, Anuman, Upman and Shabd Hetvabhash, Concept of God, Debate between Buddhism and Nyaya about Praman-Vyavastha and Praman-Samplav, Anyathakhyativaad.

Vaisesika : Concept of Padartha and its kind, Asatkaryavada, Kinds of Karan: Samavayikarana, Asamavayikarana, Nimmitkarana, Parmanukaranvad.

Unit – 3

Mimamsa : Nature of Karma, Pramanyavada, Swatah Pramanayvada and Paratahpramanyavada, Shruti and its Importance, Classification of Shruti Vakyas, Vidhi, Nishedh and Arthavada, Dharm, Bhawana, Shabd Nityavada, Jaati, Shaktivada, Major points of differences between Kumaril and Prabhakar, Triputi-Pratyakshvada and Jnatatavada, Abhava and Anuplabdhi, Anvitabhidhanvada and Abhihitanavayavada, Theory of error, Akhyati, Viparitakhyati and Atheism.

Advaita Vedanta : Brahman, Atma and Relation between Brhman and Atma, Three grades of Satta, Adhyas, Maya, Jiva, Vivartvada, Anirvachniyakhyativada and Nature of Liberation.

Unit – 4

Visistadvaita Vedanta : Saguna Brahman, Refutation of Mayavada of Shankara, Brahman and Jiva and Aprithaksiddhi Sambandh, Bhakti and Prapatti, Brahamanparinamvada, Satkhyati, Liberation.

Dvaita Vedanta : Rejection of Nirgun Brahman and Maya, Bheda and Sakshi, Bhakti.

Dvaitadvaita Vedanta : Concept of Jnanaswaroop, Kinds of inanimate.

Suddhadvaita Vedanta : Concept of Avikria-Parinamavada.

Suggested Readings :

1. S. Radhakrishnan, 2008, : Indian Philosophy, Vol. I & II, Oxford India Paper backs.
2. S. N. Dasgupta, 1973 : History of Indian Philosophy, Vol. I, II & III, Motilal Banarsi das, New Delhi.
3. C. D. Sharma, 2013 : A Critical Survey of Indian Philosophy, Motilal Banarsi das, New Delhi.
4. M.Hiriyanna, 1965, : Outlines of Indian Philosophy, Motilal Banarsi Das, New Delhi.
5. Yadunath Sinha, 1930 : Indian Philosophy, Vol. I & II, Macmillan London.
6. संगम लाल पाण्डेय, 1973 : भारतीय दर्शन का सर्वेक्षण, सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस।
7. नन्द किशोर देवराज, 1976 : भारतीय दर्शन, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ।
8. दत्त एवं चटर्जी, 2012 : भारतीय दर्शन, पुस्तक भण्डार पब्लिशिंग हाउस, पटना।
9. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, 1963 : भारतीय दर्शन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसीदास।
10. बलदेव प्रसाद उपाध्याय, 1976 : भारतीय दर्शन, शारदा मन्दिर, वाराणसी।
11. चन्द्रधर शर्मा, 1996 : भारतीय दर्शन आलोचना एवं अनुशीलन, मोतीलाल बनारसीदास।
12. बी0 एन0 सिंह, 1988 : भारतीय दर्शन की रूपरेखा, आशा प्रकाशन, दिल्ली।

दर्शनशास्त्र विभाग

एम0 ए0, सेमेस्टर द्वितीय,

प्रश्नपत्र द्वितीय

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):–एम0ए0 द्वितीय सेमेस्टर के द्वितीय प्रश्न पत्र आधुनिक पाश्चात्य दर्शन की प्रथम यूनिट का उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक पाश्चात्य दर्शन के पिता देकार्त के बुद्धिवादी दर्शन का विहंगम अवलोकन कराना व देकार्त के बुद्धिवादी दर्शन की स्पिनोजा द्वारा आलोचना के साथ–साथ देकार्त के बुद्धिवादी द्वैतवाद का स्पिनोजा के बुद्धिवादी अद्वैतवाद में परिवर्तन व स्पिनोजा के दर्शन के विविध सिद्धान्तों का अवबोध कराना है। जबकि द्वितीय यूनिट का उद्देश्य स्पिनोजा के बुद्धिवादी अद्वैतवाद की आलोचना करते हुए लाइबनित्ज के बुद्धिवादी बहुलवाद तथा उसके प्रमुख सिद्धान्तों का अवबोध कराना व लॉक द्वारा बुद्धिवादी सिद्धान्तों की आलोचना तथा अनुभववाद की प्रतिष्ठापना व अनुभववाद के आधार पर जड़ तत्व, आत्म तत्व व ईश्वर की अवधारणाओं की स्थापना का ज्ञान कराना है। तृतीय यूनिट का उद्देश्य बर्कले द्वारा लॉक के अनुभववाद का मूल्यांकन व आत्मनिष्ठ अनुभववाद/आत्मनिष्ठ प्रत्ययवादी की सिद्धान्तों की स्थापना का ज्ञान कराना व ह्यूम द्वारा अनुभववादी सिद्धान्तों के आधार पर ही लॉक का ही नहीं बल्कि बर्कले की स्थापनाओं का खण्डन करते हुए अनुभववाद का संदेहवाद में कैसे प्रतिफलन होता है, को स्पष्ट करना व इसमें सहायक ह्यूम के प्रमुख सिद्धान्तों का ज्ञान कराना है। चतुर्थ यूनिट में बुद्धिवादी दार्शनिकों (देकार्त, स्पिनोजा व लाइबनित्ज) तथा अनुभववादी दार्शनिकों (लॉक, वर्कले व ह्यूम) का मूल्यांकन करते हुए काण्ट द्वारा समीक्षावाद की स्थापना का ज्ञान कराना व काण्ट के अनुभवातीत द्वन्द न्याय (पक्ष व प्रतिपक्ष के असमन्वय पर आधारित) के स्थान पर हेगल के द्वन्द न्याय (पक्ष, प्रतिपक्ष के समन्वय पर आधारित) द्वारा वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवाद का ज्ञान कराना है।

इकाई – 1

डेकार्ट : 'मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ', ईश्वर के अस्तित्व सम्बन्धी प्रमाण, मन–शरीर समस्या (अन्तक्रियावाद)।

स्पिनोजा : द्रव्य गुण एवं पर्याय, मन– शरीर सम्बन्ध (समानान्तरवाद), सर्वेश्वरवाद।

इकाई – 2

लाइबनित्ज : चिदणुवाद, पूर्व स्थापित सामन्जस्य।

लॉक : जन्मजात प्रत्ययों का खण्डन, ज्ञान का स्वरूप एवं सीमा।

इकाई – 3

बर्कले : अमूर्त प्रत्ययों का खण्डन, आत्मगत प्रत्ययवाद।

ह्यूम : संस्कार और विज्ञान, सरल एवं मिश्र प्रत्यय, प्रत्यय–साहचर्य के नियम और ज्ञान, सन्देहवाद, कारणता सिद्धान्त।

इकाई – 4

काण्ट : समीक्षावाद, संश्लेषणात्मक अनुभव निरपेक्ष निर्णय, देश एवं काल।

हेगेल : निरपेक्ष सत् का स्वरूप, द्वन्द्वात्मक पद्धति, वस्तुगत प्रत्ययवाद।

M.A. Second - II
Paper – II
Modern Western Philosophy

Unit – 1

Descartes : 'Cogito ergo Sum', Proofs for the Existence of God, Mind-Body Problem (Interaclionism)

Spinoza : Substance, Attributes and Modes, Mind–Body Relation (Parallelism), Pantheism .

Unit – 2

Leibnitz : Monadology, Pre-established Harmony.

Locke : Refutation of Innate Ideas, Nature and Limits of Knowledge.

Unit – 3

Berkeley : Refutation of Abstract Ideas, Subjective Idealism.
Hume : Impressions and Ideas, Simple and Compound Ideas, Laws of Association of Ideas and Knowledge, Scepticism, causation theory.

Unit – 4

Kant : Criticism, Synthetic Apriori Judgments, Space and Time.

Hegel : Nature of Absolute Reality, Dialectic Method, Objective Idealism.

Suggested Readings :

1. Fuller B.A.G., 1952, Henery Halt & Co. : A History of Philosophy
2. W.T. Stace. 2010, Macmillal Publisher, India. : A Critical History of Philosophy
3. Falkenberg, 2019, Good Press. : A History of Modern Philosophy
4. Thilly, 2001, Central Publishing House, Allahabad. : A History of Philosophy
5. W.K. Wright, 1952, Macmillal Publisher, India. : A History of Modern Philosophy
6. चन्द्रधर शर्मा, 1992, मोती लाल बनारसी दास नई दिल्ली। : पाश्चात्य दर्शन
7. याकूब मसीह, 1994, मोती लाल बनारसी दास नई दिल्ली। : पाश्चात्य दर्शन का समीक्षात्मक इतिहास
8. संगम लाल पाण्डेय, 1964, दर्शनपीठ, इलाहाबाद। : आधुनिक दर्शन की भूमिका
9. जे०एस०श्रीवास्तव, 1980 : आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
10. हरिशंकर उपाध्याय, 2002, अनुशीलन प्रकाशन, इलाहाबाद। : पाश्चात्य दर्शन का उद्‌भव एवं विकास
11. दयाकृष्ण, 1982, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर। : पाश्चात्य दर्शन Vol. I & II

दर्शनशास्त्र विभाग

एम0ए0 सेमेस्टर द्वितीय,

प्रश्नपत्र तृतीय

पाश्चात्य समाज एवं राजनीतिक दर्शन

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):–एम0ए0 द्वितीय सेमेस्टर के तृतीय प्रश्न पत्र पाश्चात्य समाज एवं राजनीतिक दर्शन की प्रथम यूनिट का उद्देश्य विद्यार्थियों को राजनीति दर्शन के स्वरूप व विधियों के आलोक में राज्य के मूलतत्वों, उसके दार्शनिक आधारों तथा राज्य की उत्पत्ति से सम्बन्धित विविध दार्शनकि सिद्धान्तों का तार्किक ज्ञान कराना है। द्वितीय यूनिट का उद्देश्य राज्य के अन्तर्गत न्याय के विभिन्न सिद्धान्तों व राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रशासन में न्याय की स्थापना व नियमों की अवहेलना की स्थिति में दण्ड की भूमिका का दार्शनिक अवबोध कराना है। वहीं तृतीय यूनिट का उद्देश्य अन्य शासन प्रणालियों के विरूद्ध लोकतंत्र की सर्वश्रेष्ठ शासन प्रणाली से सम्बन्धित विविध सिद्धान्तों का दार्शनिक अवबोध व मूल्यांकन करना व कराना है। ऐसे ही चतुर्थ यूनिट का उद्देश्य पूँजी के केन्द्रीकरण के रूप में पूँजीवाद, संवैधानिक उपयों द्वारा पूँजी के विकेन्द्रीकरण के रूप में समाजवाद तथा वर्ग संघर्ष के उपायों द्वारा पूँजी के विकेन्द्रीकरण के रूप में साम्यवाद का ज्ञान करना व कराना है जबकि मानवतावादी मूल्यों व सरोकारों को दरकिनार कर मानवता से रहित राष्ट्रवादी मूल्यों के आधार पर स्थापित राष्ट्रीय शासन प्रणाली के रूप में फासीवादी व नाजीवादी सिद्धान्तों का दार्शनिक अवबोध कराना व इन शासन प्रणालियों की मानव समाज के सम्बन्ध में राजनैतिक औचित्य व अनौचित्य बताना है।

इकाई – 1

समाज की उत्पत्ति, संस्थाओं की उत्पत्ति, समाज के दार्शनिक आधार, समाज दर्शन की विधियाँ, समाज दर्शन का अध्ययन क्षेत्र, समाज दर्शन का दर्शनशास्त्र, राजनीतिशास्त्र एवं समाजशास्त्र से सम्बन्ध। राज्य के दार्शनिक आधार, राज्य के मूल तत्त्व, राज्य की उत्पत्ति के विभिन्न सिद्धान्त, राज्य के स्वरूप से सम्बन्धित विभिन्न मत। राजनीतिक दर्शन का स्वरूप एवं विधियाँ।

इकाई – 2

प्लेटोः आदर्श राज्य एवं न्याय,

लॉक, हाब्स, रूसोः सामाजिक समझौता का सिद्धान्त।

इसाह बर्लिनः स्वतंत्रता की अवधारणा।

बर्नार्ड विलियम्सः समानता की अवधारणा।

इकाई – 3

उदारवाद–

राल्सः वितरण आधारित न्याय का सिद्धान्त।

नाजिकः स्वामित्व आधारित न्याय का सिद्धान्त।

ड्वार्किनः समानता आधारित न्याय का सिद्धान्त।

अमर्त्यसेनः वैश्विक न्याय, स्वतंत्रता एवं क्षमता।

मार्क्सवादः द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, अलगाववाद, पूँजीवाद की आलोचना, वर्ग संघर्ष का सिद्धान्त और वर्गविहिन समाज।

सामूहिकतावादः उदारवादी सिद्धान्त की समुदायवाद की दृष्टिकोण से आलोचना सार्वभौमवाद बनाम व्यक्तिवाद।

चार्ल्स टेलरः सामूहिकतावाद सम्बन्धी सिद्धान्त।

मैकेन्टायरः सामूहिकतावाद सम्बन्धी सिद्धान्त।

माइकल सेन्डेलः सामूहिकतावाद सम्बन्धी सिद्धान्त।

इकाई – 4

बहुसंस्कृतिवाद–

चार्ल्स टेलर का बहुसंस्कृतिवाद एवं पहचान की राजनीति।

विल किमलिका का बहुसंस्कृतिवाद एवं अल्पसंख्यक अधिकार की अवधारणा।

नारीवादः मूलभूत अवधारणा, पितृसत्तावाद, नारीद्वेष की अवधारणा, लिंगीय असमानता, नारीवाद के विविध सिद्धान्त, उदारवादी, समाजवादी, उग्र नारीवाद, पर्यावरणीय नारीवाद।

Department of Philosophy
M.A. Semester II
Paper – III

Western Social & Political Philosophy

Unit – 1

Origin of Society, Origin of Institutions, MPHIlosoMPHIcal Basis of Society, Methods of Social Philosophy, Scope of Social Philosophy, Relation of Social Philosophy with Philosophy, Political Science and Sociology. MPHIlosoMPHIcal Basis of State, Basic Elements of State, Various Theories for the Origin of State, Various Theories for the Nature of State, Nature and Methods of Political Philosophy.

Unit – 2

Plato: Ideal State and Justice.
Locke, Hobbes, Rousseau: Social concept theory
Isaiah Berlin: Conception of liberty.
Barnard Williams: Concept of equality.

Unit – 3

Liberalism-
Rawls: Distributive Justice.
Nozick: Justice as entitlement.
Dworkin: Justice as equality.
Amartyasen: Global Justice freedom and capibility.
Marxism: Dialectical Materialism, alieanition, critique of captilaism, Doctrine of class struggle and classess society.
Communitarianism: Communitarian critique of liberal theory, Universalism Vs. Particularism.
Charles Taylor: Theory of Communitarianism.
MachIntyre: Theory of Communitarianism.
Michael Sandel: Theory of Communitarianism.

Unit – 4

Multicultralism-
Charles Taylor: Multicultralism and politics of of recognition.
Will Kimlicka: Multicultralism and conception of Minority right.
Feminism Basic concepts, Patriarchy, misogyny, Gender-inequality, Theories of Feminism, Liberal. Socialist, radical and eco-feminism.

Suggested Readings :

1. George H. Sabine, 1973 : A History of Political Philosophy, Oxford & IBH Publishing Co. Pvt. Ltd., New Delhi.
2. D. D. Raphael, 1910 : Problems of Political Philosophy, Macmillan, London.
3. J. S. Mackenzie, 2016 : An Outlines of Social Philosophy, Palala Press.
4. जगदीश सहाय श्रीवास्तव, 2002 : समाज दर्शन की भूमिका, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
5. शिवभानु सिंह, 2016 : समाज दर्शन का सर्वेक्षण, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
6. हृदय नारायण मिश्र, 1995 : समाज दर्शन (सैद्धान्तिक एवं समस्यात्मक), शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. वशिष्ठ नारायण सिन्हा, 1980 : समाज दर्शन, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
8. गीतारानी अग्रवाल, 2008 : धर्म शास्त्रों का समाजदर्शन, न्यू भारती बुक कारपोरेशन, दिल्ली।

दर्शनशास्त्र विभाग

एम0ए0 सेमेस्टर द्वितीय,

प्रश्नपत्र चतुर्थ

अधिनीतिशास्त्र एवं अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):–एम0ए0 द्वितीय सेमेस्टर के चतुर्थ प्रश्न पत्र अधिनीतिशास्त्र एवं अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र की प्रथम यूनिट का उद्देश्य विद्यार्थियों को अधिनीतिशास्त्र और मानकीय नीतिशास्त्र के बीच के अन्तर को स्पष्ट करते हुए मानकीय नीतिशास्त्र में प्रयुक्त होने वाले नैतिक शब्दों के औचित्य एवं अनौचित्य तथा उनकी प्रामाणिकता और अप्रामाणिकता से सम्बन्धित विविध अधिनैतिक सिद्धान्तों (संज्ञानवादी व असंज्ञानवादी) का ज्ञान कराना तथा संज्ञानवाद के प्रमुख अधिनीतिशास्त्री मूर के अधिनैतिक सिद्धान्तों का ज्ञान कराना है। जबकि द्वितीय यूनिट का उद्देश्य असंज्ञानवादी अधिनैतिक सिद्धान्तों की विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए इसकी प्रमुख शाखा संवेगवाद के प्रमुख अधिनीतिशास्त्रियों एअर व स्टीवेंसन व परामर्शवाद के प्रमुख अधिनीतिशास्त्री हेयर के सिद्धान्तों का अवबोध कराना है। तृतीय यूनिट का उद्देश्य सैद्धान्तिक नीतिशास्त्रीय व अधिनीतिशास्त्रीय सिद्धान्तों के स्थान पर अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र (Applied Ethics) की उपादेयता को बताना तथा मनुष्य व प्रकृति के बीच बढ़ते हुए प्रतिकूल सम्बन्धों तथा मनुष्य द्वारा प्रकृति के अधिकाधिक दोहन के कारण उत्पन्न हो रहे मनुष्य के अस्तित्व पर संकट के समाधान हेतु पारिस्थितिकीय नीतिशास्त्र के सिद्धान्तों व उसकी महत्ता का अवबोध कराना है। चतुर्थ यूनिट का उद्देश्य भौतिकवाद में उलझे मनुष्य का मनुष्य के विरूद्ध तमाम संवैधानिक नियमों एवं कानूनों तथा दण्ड के विविध विधानों के बावजूद भी खड़ा होना तथा उनका उल्लंघन करते हुए लिंग अधारित भ्रूण हत्या के बढ़ने के कारण नैतिक आधारों पर इस समस्या का औचित्य खोजना तथा लिंगीय असमानता के विरूद्ध मनुष्य को जागरूक करना साथ ही सामाजिक, आर्थिक व भौतिक व स्वास्थ्य आदि समस्याओं में उलझे हुए मनुष्यों द्वारा संविधान द्वारा प्रदत्त जीवन जीन के अधिकार के विरूद्ध मरने के अधिकार की तलाश तथा सामाजिक दायित्वों के निर्वहन में असमर्थतता के विकल्प के रूप में आत्महत्या को चुनने के नैतिक औचित्य व अनौचित्य का बोध करना व कराना है।

इकाई – 1

क. अधिनितिशास्त्र की परिभाषा एवं स्वरूप, अधिनीतिशास्त्र की मूल समस्यायें, अधिनीतिशास्त्र और मानकीय नीतिशास्त्र।

ख. संज्ञानवाद– प्रकृतिवाद एवं निर्प्रकृतिवाद।

ग. मूरः शुभ का अर्थ और प्रकृतिवादी तर्कदोष।

इकाई – 2

क. असंज्ञानवाद– स्वरूप एवं विशेषतायें।

ख. ए0जे0 एअरः– शुभ का अर्थ एवं नैतिक निर्णय।

ग. संवेगवाद– स्टीवेन्सनः नैतिक निर्णय का अर्थ एवं स्वरूप, नैतिक असहमति।

घ. परामर्शवाद– आर0एम0 हेयर : नैतिक निर्णय का अर्थ एवं स्वरूप।

इकाई – 3

क. अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र की परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र एवं आवश्यकता।

ख. तकनीकी का दर्शन, तकनीकी प्रभुत्व, शक्ति एवं तकनीक की सामाजिक असमानता, तकनीक का लोकतांत्रीकरण, विज्ञान एवं तकनीक का लोक–मूल्यांकन, सूचना तकनीकी, बायो–तकनीकी एवं गैर–तकनीकी का नैतिक प्रभाव।

ग. मनुष्य प्रकृति सम्बन्ध।

घ. पारिस्थितिकी नीतिशास्त्र, प्रकृति– साधन या साध्य के रूप में।

ड0–**एल्डो लियो पोल्ड–** भूमि सम्बन्धी नैतिक मूल्य।

च– **अर्ने नेस–** गहन पारिस्थितिकी।

छ– **पीटर सिंगर–** पशु अधिकार।

इकाई – 4

क. जीवन का अर्थ एवं मूल्य।

ख. कन्या भ्रूण हत्या

ग. इच्छामृत्यु–नैतिक या अनैतिक?

घ. आत्महत्या की परिभाषा एवं नैतिक मूल्यांकन।

ड0– चिकित्सय नैतिकता, चिकित्सक मरीज सम्बन्ध, गर्भपात।

च–पेशा सम्बन्धी नैतिकता, कारपोरेट सरकार और नैतिक जिम्मेदारी

Department of Philosophy

M.A. Semester – II

Paper – IV

Meta-ethics and Applied Ethics

Unit – 1

(i). Definition and Nature of Meta- ethics, fundamental problemes of Metaethics, Metaethics and normative ethics.

(ii). Cognitivism-Naturalism and Non-Naturalism.

(iii). Moore: Meaning of Good and Naturalistic Fallacy.

Unit – 2

(i). Nature and Characteristics of Non-Cognitivism.

(ii). A.J. Ayer: Meaning of Good and Nature of Moral Judgement.

(iii). Emotivism-Steuenson: Meaning and Nature of Moral Judgement.

(iv). Prescriptivsm-R.M. Hard: Meaning and Nature of Moral Judgements.

Unit – 3

(i). Definition of applied Ethics, its nature scope its necessity, Problems of applied ethics.

(ii) Philosophy of technology: technology, dominance, power and social inequalities.

(iii) Democratization of Technology, Public evaluation of science and dtechnology, Ehtical Implication of information technology, bio-technology, non-technology.

(iv). Man-Nature Relation.

(v). Ecological Ethics, Nature as means or end.

(vi) **Aldo-Leopold:** Land-ethics,

(vii) **Arne Naess:** Deep ecology.

(viii) **Peter Singer:** Animal Rights.

Unit – 4

(i). Meaning and Value of Life.

(ii). Female-infanticide.

(iii). Euthanasia.

(iv). Sucide, Definition and Evaluation.

(v) Medical-Ethics: Surrogacy, Doctor-Patient relationship, abortion.

(vi) Professional Ethics: Corporate governance and ethical responsibilty.

Suggested Readings :

1. W. D. Hudson, 1983 : Modern Moral Philosophy, Palgrave Macmillan, London.
2. Binkley, 2011 : Contemporary Ethical Theories, Leteracy Licensing, LLC, Whitefishmt.
3. Marry Warnock, 1966 : Ethics Since 1900, Oxford University Press, London.
4. G. J. Warnock, 1967 : Contemporary Moral Philosophy, Macmillan, London.
5. Rechard B. Brandt, 2011 : Ethical Theory, Leteracy Licensing, LLC, Whitefishmt.
6. Peter Singer, 1979 : Practical Ethics, Cambridge University Press, U.S.
7. वेद प्रकाश वर्मा, 1987 : अधिनीतिशास्त्र के मुख्य सिद्धान्त, एलायड पब्लिशर्स लिमिटेड, नई दिल्ली।
8. नित्यानन्द मिश्र, 2004 : नीतिशास्त्र, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली।

दर्शनशास्त्र विभाग
एम0ए0 सेमेस्टर द्वितीय
प्रश्नपत्र पंचम
प्रोजेक्ट

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):–एम0ए0 द्वितीय सेमेस्टर के पंचम प्रश्नपत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रोजेक्ट के उद्देश्य, विषय वस्तु की प्रासंगिकता उसकी समाज में उपयोगिता और उसकी तार्किकता एवं प्रामाणिकता को केन्द्र में रखते हुए किसी एक शीर्षक पर (जो उपरोक्त चार प्रश्न पत्रों में से किसी एक प्रश्न पत्र के एक शीर्षक पर होगा) होगा। प्रोजेक्ट का उद्देश्य विद्यार्थियों में शोध–वृत्ति में अभिरूचि पैदा करना है जिसमें विद्यार्थी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने शोध–शीर्षक के समस्त वस्तुनिष्ठ एवं विषयिनिष्ठ पहलुओं पर विचारोपरान्त ही किसी निष्कर्ष को स्थापित करें। उसका निष्कर्ष तार्किक एवं प्रामाणिक होना चाहिए तथा साहित्यिक चोरी से मुक्त होना चाहिए।

Department of Philosophy

M.A. Semester – II

Paper – V

project

दर्शनशास्त्र विभाग
एम0ए0 सेमेस्टर तृतीय,
प्रश्नपत्र प्रथम
समकालीन भारतीय दर्शन

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):—एम0ए0 तृतीय सेमेस्टर के प्रथम प्रश्नपत्र समकालीन भारतीय दर्शन, प्रथम यूनिट का उद्देश्य विद्यार्थियों को समकालीन भारतीय दार्शनिक महात्मा गांधी, द्वितीय यूनिट में श्री अरविन्द, तृतीय यूनिट में स्वामी विवेकानन्द व चतुर्थ यूनिट में सर्वपल्ली राधाकृष्णनन द्वारा प्राचीन भारतीय दर्शन के विविध सिद्धान्तों का समकालीन राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान हेतु व्यावहारिक धरातल पर अनुप्रयोग कराना है और उसके द्वारा मानव समाज की मुक्ति का मार्ग कैसे प्रशस्त हो, का अवबोध कराना है।

इकाई — 1

- स्वामी विवेकानन्द : सार्वभौमिक धर्म, राजयोग, व्यक्ति का स्वरूप, व्यावहारिक वेदान्त।
- श्री अरविन्द : व्यक्ति, प्रकृति एवं ईश्वर की अवधारणा, दिव्यजीवन—बोध, समग्रयोग।

इकाई — 2

- के0सी0 भट्टाचार्य : विचारों में स्वराज दर्शन की अवधारणा, विषयीः स्वतंत्रता के रूप में, माया का सिद्धान्त।
- जे0 कृष्णमूर्ति : विचार की अवधारणा, ज्ञात से स्वतंत्रता, आत्मा का विश्लेषण, अनैच्छिक चेतना।
- डॉ0 एस0 राधाकृष्णन् : तत्त्व—विचार, जीवन की आदर्शवादी दृष्टि, सार्वभौम धर्म की अवधारणा, जीवन की हिन्दूवादी दृष्टि।

इकाई — 3

- महात्मा गांधी : ईश्वर, सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह एवं आधुनिक सभ्यता की समालोचना।
- अम्बेडकर : जाति का निषेध, हिन्दूवाद का दर्शन, नव—बौद्धवाद।

इकाई — 4

- टैगोर : मानव धर्म, शिक्षा—दर्शन, राष्ट्रवाद की अवधारणा।
- दीनदयाल उपाध्याय : एकीकृत मानववाद, अद्वैतवेदान्त, पुरूषार्थ।

Department of Philosophy
M.A. Semester – III
Paper – I
Contemporary Indian Philosophy

Unit – 1

- Swami Vivekananda : Universal Religion, Rajyoga, Concept of Man, Practical Vedanta.
- Sri Aurbindo : Conception of Man, Nature and God, Realization of Divine life, Integral Yoga.

Unit – 2

- K.C. Bhattacharyya : Swaraj in Ideas, Concept of Philosophy, Subject as Freedom, The doctrine of Maya.
- J. Krishnam Murti: Conception of thought, Freedom from the known, analysis of self, Choiceless awareness.
- Dr. S. Radhakrishnan – Metaphysics, Idealistic view of Life, Concept of Universal Relegion. Hindu view of Life.

Unit – 3

- Mahatma Gandhi : God, Truth, Non-Violence, Satyagrah and Critique of Modern Civilization.
- Ambedkar : Annihilation of Caste, Philosophy of Hinulism, Neo-Buddhism.

Unit – 4

- Tagore : Religion of Man, Ideas on education, Concept of Nationalism.
- D.D. Upadhyay : Integral Humanism, Advaita Vedanta, Purusharth.

Suggested Readings :

1. D. M. Dutta, 1950 : Chief Currents of Contemporary Philosophy. University of Culcutta.
2. Dr. S. Radhakrishnan, 1956 : Indian Philosophy, Vol. I & II, Idealistic View of Life, Routledge and Kegan Paul.
3. Dr. R. S. Srivastava, 1983 : Contemporary Indian Philosophy, Munshi Ram Manohar Lal, Delhi.
4. बी0 के0 लाल, 1992 : समकालीन भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
5. शान्ति जोशी, 1972 : समसामयिक भारतीय दार्शनिक, कोलकत्ता प्रकाशन, कोलकत्ता।
6. ए0 सी0 भट्टाचार्या, 1972 : श्री अरविन्द दर्शन, जगबन्ध प्रकाशन, ज्ञानपुर।
7. डॉ0 लक्ष्मी सक्सेना (सम्पा0), 2017 : समसामयिक भारतीय दार्शनिक, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ।

दर्शनशास्त्र विभाग
एम0ए0 सेमेस्टर तृतीय
प्रश्नपत्र द्वितीय
समकालीन पाश्चात्य दर्शन – I

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):–एम0ए0 तृतीय सेमेस्टर के द्वितीय प्रश्नपत्र समकालीन पाश्चात्य दर्शन–1 की प्रथम यूनिट का उद्देश्य विद्यार्थियों को समकालीन पाश्चात्य दार्शनिक जी0ई0 मूर व फ्रेगे के विश्लेषणात्मक दार्शनिक विचारों, द्वितीय यूनिट में तार्किक परमाणुवाद व उससे निसृत विविध तार्किक सिद्धान्तों तथा तृतीय यूनिट में लुडविग विट्गेन्स्टाइन के तार्किक परमाणुवाद व उससे निसृत अर्थ के चित्रण सिद्धान्त व चतुर्थ यूनिट में ए0जे0 एयर के अर्थ के सत्यापन सिद्धान्त व उससे निसृत विविध दार्शनिक सिद्धान्तों का अवबोध कराना है।

इकाई – 1

समकालीन पाश्चात्य दर्शन की प्रवृत्तियाँ, जी0ई0मूर : विज्ञानवाद का खण्डन, इन्द्रिय प्रदत्त, फ्रेगे : अर्थ और वस्तु सूचकता।

इकाई – 2

बर्ट्रेण्ड रसेल : तार्किक परमाणुवाद, तटस्थ एकत्ववाद, परिचयात्मक और विवरणात्मक ज्ञान, अर्थ का वस्तुसूचकता सिद्धान्त।

इकाई – 3

लुडविग विट्गेन्स्टाइन : तार्किक परमाणुवाद, अर्थ का चित्र सिद्धान्त, वाक्य और प्रतिज्ञप्ति, नाम और वस्तु।

इकाई – 4

तार्किक भाववाद : ए0 जे0 एयर : सत्यापन सिद्धान्त और इसकी विधियाँ, कथन और प्रतिज्ञप्ति, तत्त्वमीमांसा का निरसन, दर्शन का कार्य।

Department of Philosophy

M.A. Semester – III

Paper – II

Contemporary Western Philosophy - I

Unit – 1

Tendencies of Contemporary Western Philosophy- G. E. Moore : Refutation of Idealism, Sense Data, Frege : Meaning and Reference.

Unit – 2

Bertrand Russell : Logical Atomism, Neutral Monism, Knowledge by Acquaintance and Knowledge by Descriptive, Referential Theory of Meaning.

Unit – 3

Ludwig Wittgenstein : Logical Atomism, Picture Theory of Meaning, Sentence and Proposition, Name and Object.

Unit – 4

Logical Positivism -A.J. Ayer : Verification Principle and Methods, Statement and Proposition, Elimination of Metaphysics, Function of Philosophy.

Suggested Readings :

1. D. M. Dutta, 1950 : Chief Currents of Contemporary Philosophy, University of Calcutta, Calcutta.
2. John Hospers, 1956 : An Introduction to MPHIlosoMPHIcal Analysis, Routledge and Kegan Paul.
3. Ammerman, 2003 : Classics of Analytic Philosophy, Hockalt Publishing Co. Indianapolis.
4. Richard Rorty, 1967 : The Linguistic Turn, The University of Chicago Press, Chicago.
5. Pitcher, 1964, 1917 : The Philosophy of Wittgenstein, Prentice Hall London.
6. नित्यानन्द मिश्र, 2004 : समकालीन पाश्चात्य दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
7. बसन्त कुमार लाल, 1990 : समकालीन पाश्चात्य दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
8. लक्ष्मी सक्सेना, 2009 : समकालीन पाश्चात्य दर्शन, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ।

दर्शनशास्त्र विभाग
एम0ए0 सेमेस्टर तृतीय,
प्रश्नपत्र तृतीय (वैकल्पिक)
शांकर वेदान्त (ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य)

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):—एम0ए0 तृतीय सेमेस्टर के तृतीय प्रश्नपत्र शांकर वेदान्त—1 की प्रथम यूनिट का उद्देश्य विद्यार्थियों को ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य के चतुःसूत्री का परिचय कराते हुए उसके अध्यास भाष का ज्ञान कराना व जगत को अनिर्वचनीय बताना है। जब कि द्वितीय यूनिट का उद्देश्य चतुःसूत्री के प्रथम सूत्र द्वारा ब्रह्म की जिज्ञासा तथा द्वितीय सूत्र द्वारा जगत के कारण के रूप में ब्रह्म के स्वरूप का विवेचन करना तथा तृतीय यूनिट में त्रित्रीय सूत्र व चतुर्थ सूत्र की व्याख्या करते हुए एकमात्र अद्वैत ब्रह्म की ही सत्ता को स्थापित करते हुए अद्वैतवाद का ज्ञान कराना है। जबकि चतुर्थ यूनिट का उद्देश्य अद्वैतवाद की स्थापना से सम्बन्धित विविध सिद्धान्तों का अवबोध कराना है।

इकाई – 1

- अध्यास, विवर्तवाद, अनिर्वचनीय ख्यातिवाद।
- प्रथम सूत्र – अथातो ब्रह्मजिज्ञासा, द्वितीय सूत्र – जन्माद्यस्य यतः, इत्यादि की व्याख्या, साधन चतुष्ट्य, ब्रह्म के तटस्थ लक्षण का महत्व।

इकाई – 2

- तृतीय सूत्र –शास्त्रयोनित्वात्, चतुर्थ सूत्र – तत्तु समन्वयात्, व्याख्या, कर्मविद्याफल, ब्रह्मविद्याफल।

इकाई – 3

- स्यादवाद, मध्यमपरिमाणवाद, परमाणुवाद एवं प्रकृति परिणामवाद का खण्डन।
- विज्ञानवाद, शून्यवाद एवं क्षणिकवाद का खण्डन।

इकाई – 4

- ब्रह्म का स्वरूप, आत्मा (जीव), जगत्, माया, मोक्ष।

Department of Philosophy

M.A. Semester – III

Paper – III (Optional)

Sankara Vedanta (Brahman Sutra Shankar Bhashya)

Unit – 1

- Adhyasa, Vivartavada, Anirvachaniya Khayativada.
- First Aphorism – Athato Brahmajijnasa, Second aphorism - Janmadyasya Yatah, with Exploration, Fourfold Means Importance of Tatastha Lakshana of Brahman.

Unit – 2

- Third Aphorism - Sastrayonitvat, Fourth Aphorism – Tat tu Samanvayat, with Exploration, Interpretation, Brahmman and worship, Karmavidya phala, Brahmavidyaphala.

Unit – 3

- Refutaion of Syadavada, Madhyamaparinamavada, Parmanuvada and Prakritiparinamavada.
- Refutation of Vijnanvada, Sunyavada and Ksanikvada.

Unit – 4

- Nature of Brahman, Atman (Jiva), Jagat, Maya, Moksha.

Suggested Readings :

1. K. C. Bhattacharya, 1909 : Studies in Vedantism, University of Calcutta, Calcutta.
2. N. K. Devaraja, 1972 : An Introduction to Sankara's Theory of Knowledge, Motilal Banarsidas, Delhi.
3. S. S. Ray, 1982 : The Heritage of Sankar, Munshiram Manohar Lal, Delhi.
4. T. M. P. Mahadevan, 2005 : The Philosophy of Advaita, Bhartiya Kala Prakashan, Delhi.
5. D. M. Datta, 2017 : Six Ways of Knowing, Motilal Banarsidas, Delhi.
6. रमाकान्त त्रिपाठी, 1975 : ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य चतुःसूत्री, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
7. धर्मराजाध्वरीन्द्र, 1982 : वेदान्त परिभाषा (अनु0 आचार्य गजानन शास्त्री मुसलगांवकर), चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
8. जे0एस0 श्रीवास्तव, 1990 : अद्वैत वेदान्त की तार्किक भूमिका, किताब महल, इलाहाबाद।
9. चन्द्रधर शर्मा, 2014: बौद्ध दर्शन और वेदान्त, स्टूडेन्ट्स फ्रेन्ड्स, इलाहाबाद।
10. अर्जुन मिश्र, 1990 : अद्वैत वेदान्त, म0प्र0 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।

अथवा

दर्शनशास्त्र विभाग

एम0ए0 सेमेस्टर तृतीय,

प्रश्नपत्र तृतीय

श्री अरविन्द की ज्ञान मीमांसा (वैकल्पिक)
(दिव्य जीवन–2)

इकाई – 1

- अनन्त का तर्क
- ज्ञान और अज्ञान
- सद्वस्तु और वैश्विक भ्रम
- स्मृति, आत्म चेतना और अज्ञान
- स्मृति, अहं एवं आत्मानुभव

इकाई – 2

- तादात्म्य द्वारा ज्ञान एवं भेदात्मक ज्ञान
- अज्ञान की सीमाएं
- अज्ञान का मूल
- चित्शक्ति का एकांतिक संकेन्द्रण एवं अज्ञान
- मिथ्या ज्ञान एवं भ्रम का मूल तथा उसे दूर करने के उपाय।

इकाई – 3

- सद्वस्तु एवं समग्र ज्ञान।
- समग्र ज्ञान और जीवन का लक्ष्य
- अस्तित्व के चार सिद्धान्त
- ज्ञान की ओर प्रगति–ईश्वर–मनुष्य–प्रकृति।
- विकसनशील प्रक्रिया– आरोहण एवं समाकलन।

इकाई – 4

- सप्तधा अज्ञान से सप्रभा ज्ञान की ओर प्रगति।
- अतिमानस की ओर आरोहण।
- दिव्य जीवन।

or

Department of Philosophy

M.A. Semester – III

Paper – III (Optional)

Sri Aurobindo's Epistemology
(The Life Divine-II)

Unit – 1

- The Logic of the Infinite.
- The Knowledge and the Ignorance.
- Relity and the Cosmic Illusion.
- Memory, Self-Consciousness and the Ignorance.
- Memory, Ego and Self-Exprience.

Unit – 2

- Knowledge by Identity and Separative Knowledge.
- The Boundaries of the Ignorance.
- The Origin of the Ignorance.
- Exclusive Concentration of Consciousness-Force and the Ignorance.
- The Origin and Remedy of Falsehood and Error.

Unit – 3

- Reality and the Integral Knowledge.
- The Integral Knowledge and the Aim of Life.
- Four Theories of Existence.
- The Progress to Knowledge-God, Man and Nature.
- The Evolutionary Process- Ascent and Integration.

Unit – 4

- Out of the Sevenfold Ignorance towards the Sevenfold Knowledge.
- The Ascent towards Supermind.
- The Divine Life.

Suggested Readings :

1. ए0 सी0 भट्टाचार्या, 1972 : श्री अरविन्द दर्शन, जगबन्ध प्रकाशन, ज्ञानपुर।
2. श्री अरविन्दो, 2013 : दिव्य जीवन श्री अरविन्दो आश्रम, पाण्डिचेरी।
3. Sri Aurobindo, 2013 : The Life Divine, Sri Aurobindo Ashram, Pondicherry.
4. Prof. R.S. Mishra, 2009 : The Integral Advaitism, Moti Lal Banarsi Das, Varanasi.

दर्शनशास्त्र विभाग
एम0ए0 सेमेस्टर तृतीय,
प्रश्नपत्र चतुर्थ

काण्ट का दर्शन
(Critique of Pure Reason)

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):–एम0ए0 तृतीय सेमेस्टर के चतुर्थ प्रश्नपत्र **काण्ट का दर्शन** की प्रथम यूनिट का उद्देश्य विद्यार्थियों को बुद्धिवाद और अनुभववाद के आलोचनात्मक विश्लेषण द्वारा समीक्षावाद की स्थापना व ज्ञान के क्षेत्र में कापरनिकसीय क्रान्ति का अवबोध कराना जबकि द्वितीय यूनिट का उद्देश्य ज्ञान के निर्माण में देशकाल की भूमिका का तार्किक अवबोध कराना है। तृतीय यूनिट का उद्देश्य तर्कबुद्धि, बुद्धि विकल्प, प्रागनुभविक प्रत्यय एवं आनुभविक प्रत्यय व बुद्धि विकल्पों का तात्त्विक निगमन स्पष्ट करते हुए अतीन्द्रिय तर्कशास्त्र का ज्ञान कराना है। जबकि चतुर्थ यूनिट का उद्देश्य बुद्धि विकल्पों का अतीन्द्रिय निगमन, आत्मगत निगमन एवं वस्तुगत निगमन समाकल्पन, आनुभविक एवं अतीन्द्रिय समाकल्पन व वशुद्ध समाकल्पन की अतीन्द्रिय संश्लेषणात्मक मौलिक एकता की स्थापना का ज्ञान कराना है।

इकाई – 1

समीक्षावाद, संश्लेषणात्मक एवं विश्लेषणात्मक निर्णय, आनुभविक एवं प्रागनुभविक निर्णय, संश्लेषात्मक प्रागनुभविक निर्णय एवं उनकी सम्भावना, कापरनिकसीय क्रान्ति।

इकाई – 2

इन्द्रिय–संवेद्यता, देश एवं काल, देश का तात्त्विक निगमन, देश का अतीन्द्रिय निगमन, काल का तात्त्विक निगमन, काल का अतीन्द्रिय निगमन।

इकाई – 3

तर्कबुद्धि, बुद्धि विकल्प, प्रागनुभविक प्रत्यय एवं आनुभविक प्रत्यय, स्वरूप एवं प्रकार, बुद्धि विकल्पों का तात्त्विक निगमन, अतीन्द्रिय तर्कशास्त्र।

इकाई – 4

बुद्धि विकल्पों का अतीन्द्रिय निगमन, आत्मगत निगमन एवं वस्तुगत निगमन समाकल्पन, आनुभविक एवं अतीन्द्रिय समाकल्पन। विशुद्ध समाकल्पन की अतीन्द्रिय संश्लेषणात्मक मौलिक एकता।

Department of Philosophy

M.A. Semester – III

Paper – IV

Philosophy of Kant
(Critique of Pure Reason)

Unit – 1

Criticism, Synthetic and Analytic Judgment, Apriori and Empirical Judgment, Synthetic Apriori Judgment and their Possibility Coppernican Revolution.

Unit – 2

Sensibility, Space and Time, Metaphysical Deduction of Space, Transcendental Deduction of Space, Metaphysical Deduction of Time, Transcendental Deduction of Time, Transcendental Logic

Unit – 3

Understanding, Categories of Understanding, Apriori Ideas and Empirical Ideas, Judgement and its kinds, Metaphysical Deduction of Categories of Understanding.

Unit – 4

Transcendental Deduction of Categories, Subjective deduction, Objective Deduction, Apperception, Empirical and Transcendental Apperception, Transcendental Synthetic Unity of Pure Consciousness.

Suggested Readings –

1. Kant (Tr. N. K. Smith), 2007 : Critique of Pure Reason, Macmillan, London.
2. Paton, 1936 : Metaphysics of Experience, G. Allen & Unwin, London.
3. A. C. Ewing, 1996 : A Short Commentary on Kant's Critique of Pure Reason, University of Chicago Press, Chicago.
4. Korner, 1955 : Kant, Yele University Press, U.K.
5. Hartnock, 2001 : Kant's Theory of Knowledge, Hockett Publishing Company, U.K. .
6. N. K. Smith : A Short Commentary on Kant's Critique of Pure Reason.
7. P. F. Strawson, 1966 : Bounds of Sense, Melhuen Publishing, U.K..
8. B. A. G. Fuller, 1952 : A History of Western Philosophy, Henry Holt & Co.
9. सभाजीत मिश्र, 1988 : कान्ट का दर्शन, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
10. संगम लाल पाण्डेय, 1971 : कान्ट का दर्शन, दर्शनपीठ, इलाहाबाद।

दर्शनशास्त्र विभाग
एम0ए0 सेमेस्टर तृतीय,
प्रश्नपत्र पंचम

प्रोजेक्ट

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):—एम0ए0 तृतीय सेमेस्टर के पंचम प्रश्नपत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रोजेक्ट के उद्देश्य, विषय वस्तु की प्रासंगिकता उसकी समाज में उपयोगिता और उसकी तार्किकता एवं प्रामाणिकता को केन्द्र में रखते हुए किसी एक शीर्षक पर (जो उपरोक्त चार प्रश्न पत्रों में से किसी एक प्रश्न पत्र के एक शीर्षक पर होगा) होगा। प्रोजेक्ट का उद्देश्य विद्यार्थियों में शोध–वृत्ति में अभिरूचि पैदा करना है जिसमें विद्यार्थी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने शोध–शीर्षक के समस्त वस्तुनिष्ठ एवं विषयिनिष्ठ पहलुओं पर विचारोपरान्त ही किसी निष्कर्ष को स्थापित करें। उसका निष्कर्ष तार्किक एवं प्रामाणिक होना चाहिए तथा साहित्यिक चोरी से मुक्त होना चाहिए।

Department of Philosophy

M.A. Semester – III

Paper – V

Project

दर्शनशास्त्र विभाग

एम0ए0 सेमेस्टर चतुर्थ,

प्रश्नपत्र प्रथम

तुलनात्मक धर्म

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):—एम0ए0 चतुर्थ सेमेस्टर के प्रथम प्रश्नपत्र तुलनात्मक धर्म के प्रथम यूनिट का उद्देश्य विद्यार्थियों को विविध धर्मों के बीच तुलना के दार्शनिक आधारों का ज्ञान कराना, विविध धर्मों के लक्ष्यों तथा उन धर्मों के विविध प्रतीकों के दार्शनिक अर्थों का ज्ञान कराना व द्वितीय यूनिट का उद्देश्य हिन्दू, बौद्ध, जैन, ईसाई व इस्लाम धर्मों के सिद्धान्तों का दार्शनिक ज्ञान कराना व तृतीय यूनिट का उद्देश्य धार्मिक अनुभव व धार्मिक भाषा के विविध रूपों का ज्ञान कराना जबकि चतुर्थ यूनिट का उद्देश्य धर्म से सम्बन्धित विविध समस्याओं का दार्शनिक समाधान ढूँढना है।

इकाई – 1 तुलनात्मक धर्म एवं उसके प्रमुख पहलू

तुलना के आधार : वैचारिक एवं क्रियात्मक, उद्भव, विकास एवं उपयोगिता।

धर्मों का लक्ष्य एवं उसको प्राप्त करने का उपाय : आत्म–साक्षात्कार एवं लोक–दृष्टि (स्वधर्म एवं परधर्म)।
धर्मो में प्रतीक का स्वरूप, अर्थ और महत्व, अशुभ एवं दुःख की समस्या।

इकाई – 2 विश्व के प्रमुख धर्म

हिन्दू धर्म : तत्त्व विचार एवं आचार, विश्वैकात्म्यवाद एवं अवतारवाद ।
बौद्ध धर्म : नैरात्म्यवाद, निर्वाण और बोधिसत्व।
जैन धर्म : बन्धन, मोक्ष और पंच महाव्रत।
इसाई धर्म : ईश्वर, पवित्र आत्मा, प्रेम और मसीहा की अवधारणा।
इस्लाम धर्म : पंच स्तम्भ, सूफीवाद।

इकाई – 3 धार्मिक अनुभूति एवं धार्मिक भाषा

धार्मिक अनुभूति– रहस्यवाद, रहस्यात्मक अनुभूति की विशेषताएं,
रहस्यवाद के उदाहरण, धार्मिक चेतना का स्वरूप
धार्मिक भाषा– ए0जे0 एअर और धार्मिक भाषा, हेयर का ब्लिक सिद्धान्त, व्रेथवेट के अनुसार धार्मिक भाषा का स्वरूप, धार्मिक भाषा के सम्बन्ध में ए0जी0एन0 फ्लीव का मिथ्यापनीयता का सिद्धान्त

इकाई – 4 धर्म दर्शन के समक्ष समकालीन चुनौतियॉ

विश्व धर्म की सम्भावना, वैज्ञानिक अभिरुचि।
धर्म निरपेक्षता, धार्मिक सहिष्णुता एवं धार्मिक कट्टरतावाद।
डॉ0 भगवानदास के धर्म सम्बन्धी विचार, विश्व धर्मों की एकता।

Department of Philosophy
M.A. Semester IV
Paper I
Comparative Religion

Unit – 1 Comparision Religions and its major aspect

Comparision of Religions: Imporance and Methods.
Standards of Comparision : Theoritical and Practical, Origin, Development and Utility.
Aims of Religions and ways of Achieving it : Self-Realisation and World-View (Swadharm Pardharm)
Nature, meaning and Importance of symbol in religion, of evil and sorrow problems.

Unit – 2 Mejor Religions of World.

Hinduism : Metaphysics and Ethics, Theory of one Self, Incarnation.
Buddhism : Nairatmyavada, Nirvana and Bodhisattva.
Jainism : Bondage, Liberation and Pancha Mahavratas.
Christianity: God, The Holy Ghost, Concept of Christ and Love.
Islam: Five Pillars, Sufis,
Mysticism and Religious Experience

Unit – 3 Religious Experience and Religious Language

Religious Experience- Mysticism, Characteristics of Mystic Experience, Examples of Mysticism, Nature of Religious Conciousness.
Religious Language: A.J. Ayer and Religious Language, Bick Theory of Hare, Nature of Religious Language According to Braithwaite, Falsifiability Principle of A. G.N. Flew regarding Religious Language.

Unit – 4 Contemporary challenges before Philosophy of Religion.

Possibility of World Religion, Scientific Temper.
Secularism, Religious Tolerance and Religious Extrimism.
Dr. Bhagwan Das, Views on Religion: Unity of World Religions.

Suggested Readings :

1. Joachim Wach, 1961 : A Comparative study of Religions, Columbia University, Press.
2. P. V. Chatterji, 1971 : Studies in Comparative Religion, Das Gupta Publication, Calcutta.
3. J. N. Ferkuhar, 1920, 1967 : Outlines of Religions Literature of India, Motilal Banarsi Das, Delhi.
4. R. S. Mishra, 2004 : MPHIlosoMPHIcal Foundation of Hinduism, Munshiram Manoharlal, Delhi.
5. आर0 एस0 श्रीवास्तव, 1998 : तुलनात्मक धर्म, मुंशीराम मनोहरलाल, दिल्ली।
6. याकूब मसीह, 1990 : धर्म का तुलनात्मक अध्ययन, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
7. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, 2014 : धर्म दर्शन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

दर्शनशास्त्र विभाग

एम0ए0 सेमेस्टर चतुर्थ,

प्रश्नपत्र द्वितीय

समकालीन पाश्चात्य दर्शन– II

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):–एम0ए0 चतुर्थ सेमेस्टर के द्वितीय प्रश्नपत्र **समकालीन पाश्चात्य दर्शन– II** के प्रथम यूनिट का उद्देश्य विट्गेन्स्टाइन द्वारा अपने पूर्व के सिद्धान्तों पर पुनर्विचार करते हुए तार्किक परमाणुवाद का खण्डन करना और दार्शनिक समस्याओं के स्वरूप, भाषा के प्रयोग व भाषीय–खेल के माध्यम से दर्शन के विविध पक्षों का ज्ञान कराना है। वहीं द्वितीय यूनिट का उद्देश्य गिल्बर्ट और जे0एल0 आस्टिन के विश्लेषणात्मक दर्शन का बोध कराना है। तृतीय यूनिट का उद्देश्य प्राचीन अनुभववाद व मन और शरीर से सम्बन्धित दार्शनिक सिद्धान्तों का विश्लेषण करते हुए डब्ल्यू0 वी0 क्वाइनः अनुभववाद के दो हठ, तीक्ष्ण अनुभववाद एवं पी0एफ0 स्ट्रासन के व्याख्यात्मक एवं संशोधनात्मक तत्त्वमीमांसा तथा व्यक्ति की अवधारणा का ज्ञान कराना है। जबकि चतुर्थ यूनिट का उद्देश्य हुजरल : फेनामेनालॉजिकल विधि व अस्तित्ववाद के प्रमुख दार्शनिकों द्वारा सार की तुलना में अस्तित्व को प्राथमिकता प्रदान करने वाले दार्शनिकों (किर्कगार्ड, हेडेगर एवं सार्त्र) के विचारों का अवबोध कराना है।

इकाई – 1

पश्चात्वर्ती विट्गेन्स्टाइनः तार्किक परमाणुवाद का खण्डन, दार्शनिक समस्याओं का स्वरूप, भाषा का प्रयोग, भाषीय–खेल।

इकाई – 2

गिल्बर्ट राइलः तार्किक व्यवहारवाद, कोटि–दोष, जे0 एल0 आस्टिनः भाषा के स्थिरार्थक एवं सम्पादनात्मक प्रयोग, वाक्–क्रिया।

इकाई – 3

डब्ल्यू0 वी0 क्वाइनः अनुभववाद के दो हठ, तीक्ष्ण अनुभववाद, पी0एफ0 स्ट्रासनः व्याख्यात्मक एवं संशोधनात्मक तत्त्वमीमांसा, व्यक्ति की अवधारणा।

इकाई – 4

हुजरल : फेनामेनालॉजिकल विधि, चेतना की विषयापेक्षा,
अस्तित्ववाद – किर्कगार्ड, हेडेगर एवं सार्त्र।

Department of Philosophy

M.A. Semester – IV

Paper – II

Contemporary Western Philosophy - II

Unit – 1

Latter Wittgenstein: Refutation of Logical-Atomism, Nature of MPHIlosoMPHIcal Problem, Uses of Language, Language Game.

Unit – 2

Gilbert Ryle: Logical Behaviourism, Categorical Mistake.
J. L. Austin : Constative and Performative Use of Languages.

Unit – 3

W.V. Quine : Two Dogmas of Empiricism, Acute Empiricism.
P.F. Strawson : Descriptive and Revisionary Metaphysics, Concept of Person

Unit – 4

Edmond Husserl : Phenomenological Method, Intentionality of Consciousness,

Existentialism : Kirkegaurd, Heidegger and Sartre.

Suggested Readings :

1. D. M. Dutta, 1950 : Chief Currents of Contemporary Philosophy, University of Calcutta.
2. John Hospers, 1956 : An Introduction to MPHIlosoMPHIcal Analysis, Routledge & Kegan Paul.
3. Ammerman, 1990, 2003 : Classics of Analytic Philosophy, Hackett Publishing Company, Indianapolis.
4. Richard Rorty, 1967 : The Linguistic Turn, The University of Chicago Press, Chicago.
5. Pitcher, 1964 : The Philosophy of Wittgenstein, Prentice Hall, London.
6. B. N. Tripathi, 1999 : Meaning of Life in Existentialism, Indian Books, Varanasi.
7. नित्यानन्द मिश्र, 2008 : समकालीन पाश्चात्य दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
8. बसन्त कुमार लाल, 1990 : समकालीन पाश्चात्य दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
9. लक्ष्मी सक्सेना, 2009 : समकालीन पाश्चात्य दर्शन, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ।

दर्शनशास्त्र विभाग

एम0ए0 सेमेस्टर चतुर्थ,

प्रश्नपत्र तृतीय

वेदान्त परिभाषा (धर्मराजाध्वरीन्द्र)

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):–एम0ए0 चतुर्थ सेमेस्टर के तृतीय प्रश्नपत्र वेदान्त परिभाषा के प्रथम यूनिट का उद्देश्य अद्वैत वेदान्त की ज्ञानमीमांसा के प्रत्यक्ष व अनुमान प्रमाणों की तार्किक विवेचना, द्वितीय यूनिट का उद्देश्य उपमान व शब्द प्रमाणों की तार्किक विवेचना, तृतीय यूनिट का उद्देश्य अर्थापत्ति व अनुपलब्धि प्रमाणों की विशिष्टता की स्थापना करना तथा चतुर्थ यूनिट का उद्देश्य ज्ञान के प्रामाणिकता और अप्रामाणिकता को स्पष्ट करने वाले सिद्धान्त का अवबोध कराना है। साथ ही भारतीय दर्शन के नैयायिक ज्ञानमीमांसा, बौद्ध ज्ञानमीमांसा व मीमांसक ज्ञानमीमांसा की आलोचनात्माक समीक्षा करते हुए प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति व अनुपलब्धि प्रमाण की व्यापक विवेचना व अद्वैतिक ज्ञानमीमांसा की महत्ता को स्थापित करना है।

इकाई – 1

- प्रमा व अप्रमा।
- प्रत्यक्ष प्रमाण।
- अनुमान प्रमाण।

इकाई – 2

- उपमान प्रमाण।
- शब्द प्रमाण।

इकाई – 3

- अर्थापत्ति प्रमाण।
- अनुपलब्धि प्रमाण।

इकाई – 4

- प्रामाण्यवाद– स्वतः प्रामाण्यवाद।
- परतः प्रामाण्यवाद का खण्डन।

Department of Philosophy

M.A. Semester -IV

Paper – III

Vedantaparibhasa

Unit – 1

- Prama and Aprama.
- Pratyaksha Pramana.
- Anumana Pramana.

Unit – 2

- Upmana Pramana.
- Sabda Pramana

Unit – 3

- Arthapatti Pramana.
- Anupalabdhi Pramana.

Unit – 4

- Pramanyavada-Svatahpramanyavada.
- Refutation of Paratahpramanyavada.

Suggested Readings :

1. K. C. Bhattacharya, 1909 : Studies in Vedantism, University of Calcutta, Calcutta.
2. N. K. Devaraja, 1972 : An Introduction to Sankara's Theory of Knowledge, Motilal Banarsidas, Delhi.
3. S. S. Ray, 1982 : The Heritage of Sankar, Munshiram Manohar Lal, Delhi.
4. T. M. P. Mahadevan, 2005 : The Philosophy of Advaita, Bhartiya Kala Prakashan, Delhi.
5. D. M. Datta, 2017 : Six Ways of Knowing, Motilal Banarsidas, Delhi.
6. रमाकान्त त्रिपाठी, 1975 : ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य चतुःसूत्री, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
7. धर्मराजाध्वरीन्द्र, 1982 : वेदान्त परिभाषा (अनु0 आचार्य गजानन शास्त्री मुसलगांवकर), चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
8. जे0एस0 श्रीवास्तव, 1990 : अद्वैत वेदान्त की तार्किक भूमिका, किताब महल, इलाहाबाद।
9. चन्द्रधर शर्मा, 2014: बौद्ध दर्शन और वेदान्त, स्टूडेन्ट्स फ्रेन्ड्स, इलाहाबाद।
10. अर्जुन मिश्र, 1990 : अद्वैत वेदान्त, म0प्र0 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।

दर्शनशास्त्र विभाग

एम0ए0 सेमेस्टर चतुर्थ,

प्रश्नपत्र चतुर्थ

पातंजलि का योगसूत्र

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):–एम0ए0 चतुर्थ सेमेस्टर के चतुर्थ प्रश्नपत्र पातंजलि का योगसूत्र के प्रथम यूनिट का उद्देश्य समाधिपाद का विस्तृत ज्ञान कराना, द्वितीय यूनिट का उद्देश्य साधनपाद का विस्तृत ज्ञान कराना, तृतीय यूनिट का उद्देश्य विभूतिपाद का विस्तृत ज्ञान कराना व चतुर्थ यूनिट का उद्देश्य कैवल्यपाद का विस्तृत ज्ञान कराना है। साथ ही विद्यार्थियों को पातंजलि के योगसूत्र के प्रायोगिक पक्ष की विशिष्टता बताते हुए उसे योग को एक रोजगार परक अवसर के रूप में उपस्थापित करने का ज्ञान कराना है।

इकाई – 1 समाधिपाद–

- योग शास्त्र का आरम्भ, योग के लक्षण, चित्त की वृत्तियों के भेद और उनके लक्षण,, चित्त की वृत्तियों का निरोध, समाधि वर्णन, ईश्वर प्रणिधान का महत्व, चित्त के विक्षेप और उनको दूर करने के उपाय, मन को स्थिर करने के उपाय, समाधि के अन्य भेद एवं उनका फल।

इकाई – 2 साधनपाद–

- क्रिया योग का स्वरूप और फल, अविद्या आदि पॉच क्लेश, क्लेशों के नाश का उपाय, दृश्य और दृष्टा का स्वरूप, प्रकृति और पुरूष का संयोग, योग के आठ अंगों का वर्णन।

इकाई – 3 विभूतिपाद–

- धारणा, ध्यान, समाधि का वर्णन, संयम का निरूपण, चित्त के परिणामों का विषय, प्रकृति जनित पदार्थों के परिणाम, भिन्न विषयों में संयम करने का परिणाम, विवेक ज्ञान और कैवल्य।

इकाई – 4 कैवल्यपाद–

- सिद्धि प्राप्ति के हेतु तथा जात्यान्तरण परिणाम, संस्कार शून्यता, वासनाएँ प्रकट होना और उनका स्वरूप, गुणों का वर्णन, चित्त का वर्णन, धर्ममेघ समाधि और कैवल्यावस्था।

Department of Philosophy

M.A. Semester -IV

Paper – IV

Yogasutra of Patanajali

Unit – 1 Samadhipad-

- Begining of Yoga Characteristics of Yoga, The sort of Chitta-Vrittis and its Characteristics description of Samadhi, importance of Ishwara Pranidhana, Deflection of Chitta and the measures to remove it, The measures to stable the mind or Chitta. Different forms of Samadhi and its results.

Unit – 2 Sadhanpad-

- The Nature and result of Kriya-Yoga, Avidya and other knids of Klesh. The measure to remove and destroy the Kleshas. The nature of seen and seer. The contact of Purush and Prakrit, Description of the eight Yogang.

Unit – 3 Vibhutipad-

- Explanation of Dharana, Dhayn and Samadhi, Discription of control, The objects of the modification of Chitta, The result of the by-products of Prakriti, The result of the controle of mind of Chitta in other objects, Viveka Gyan and Kaivalya.

Unit – 4 Kaivalyapad-

Mean of relization and result of Jatyantrana, Sanskar-Shunyata, apparent desires and it nature. Description of Gunas, Description of Chitta, Dharmamedha Samadhi and Kaivalyavastha.

Suggested Readings:

1. Adityanath, Yogi, "Hathyoga: Swaroop and Sadhna", Gorakhnath Mandir Math Trust, Gorakhpur, 2015.
2. Gheranda Samhita
3. Patanjal Yogasutra
4. Ramdev, Swami, "Yoga Sadhna evam Yoga Chikitsa Rahasya", Divya Prakashan, Haridwar, 2004.
5. Saraswati, Swami Satyananda, "Asana Pranayama Mudra Bandh", Bihar School of Yoga, Bihar, 2013.
6. Yogananda, Paramhansa, "Autobiography of a yogi", Yogoda Satsanga Society of India, Ranchi,1998.

दर्शनशास्त्र विभाग

एम0ए0 सेमेस्टर चतुर्थ

प्रश्नपत्र पंचम
प्रोजेक्ट एवं मौखिकी

प्रोजेक्ट एवं मौखिकी (50+50) पूर्णांक 100
(4 क्रेडिट)

उद्देश्य एवं प्रतिफल (Objective & Outcome):—एम0ए0 चतुर्थ सेमेस्टर के चतुर्थ प्रश्नपत्र पोजेक्ट एवं मौखिकी का उद्देश्य एम0ए0 प्रथम सेमेस्टर से लेकर चतुर्थ सेमेस्टर तक के समस्त प्रश्नपत्रों से सम्बन्धित तार्किक एवं गूढ़ प्रश्नों का मौखिक उत्तर देना व दर्शनशास्त्र में उनकी समझ का परीक्षण करना व कराना है।

इस प्रश्न पत्र में छात्र—छात्राओं से अपेक्षा की जाती है कि वे उन सभी प्रश्नों का उत्तर दें जो वाह्य—परीक्षक द्वारा पूछा जाता है। प्रश्न दर्शनशास्त्र के चारो सेमेस्टर में अध्ययन किये गये प्रश्न पत्रों से ही होंगे।

Department of Philosophy

M.A. Semester IV

Paper V

Project and Viva-Vocie

Project and Viva-Vocie (50+50) Marks-100 (4 Credit)

In his paper students are aspected to answer all questions whatever asked by external examineer. Question shall be concernd to all papers which are studied in all four semesters of Philosophy.

संयोजकः दर्शनशास्त्र विभाग

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

डॉ0 अवनीश चन्द पाण्डेय,

असि0 प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग,

सतीश चन्द्र कालेज, बलिया

Department of Philosophy

Session 2022-23